



INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO



**LATEST
EDITION**

RAS

RAJASTHAN PUBLIC SERVICE COMMISSION

प्रारंभिक + मुख्य परीक्षा हेतु

HANDWRITTEN NOTES

[भाग -6]

भारत + विश्व + राजस्थान का भूगोल



INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

RAS

RAJASTHAN PUBLIC SERVICE
COMMISSION

प्रारंभिक + मुख्य परीक्षा हेतु

भाग - 6

भारत + विश्व + राजस्थान का भूगोल

प्रस्तावना

प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स “RAS (Rajasthan Administrative Service) (प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु)” को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC) द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा “Rajasthan State and Subordinate Services Combined Competitive Exams” भर्ती परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे /

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : <http://www.infusionnotes.com>

Whatsapp Link- <https://wa.link/uwc5lp>

Online Order Link- <https://bit.ly/3X6MGue>

मूल्य : ₹

संस्करण : नवीनतम (2023)

विश्व भूगोल		
क्र.सं.	अध्याय	पेज नं.
1.	पृथ्वी की संरचना एवं भू वैज्ञानिक समय सारिणी <ul style="list-style-type: none">• भूपर्पटी• मेंटल• पृथ्वी की आन्तरिक संरचना• भू वैज्ञानिक समय सारिणी	1-8
2.	प्रमुख स्थलाकृतियाँ / भौतिक भू - आकृतियाँ <ul style="list-style-type: none">• पर्वत• पठार• मैदान• मरुस्थल	8-17
3.	प्रमुख नदियाँ एवं झीलें <ul style="list-style-type: none">• नदियों के किनारे बसे नगर• विश्व की प्रमुख जलसन्धियाँ इत्यादि	18-25
4.	भूकंप एवं ज्वालामुखी <ul style="list-style-type: none">• प्रकार• वितरण• इसका प्रभाव• महाद्वीप	25-45

5.	कृषि एवं इसके प्रकार <ul style="list-style-type: none">• कृषि के प्रकार• विश्व की प्रमुख फसलें इत्यादि	46-52
6.	प्रमुख औद्योगिक प्रदेश <ul style="list-style-type: none">• आकार पर आधारित उद्योग• कच्चे माल पर आधारित उद्योग• उद्योग को प्रभावित करने वाले कारक• विश्व के प्रमुख उद्योग• विश्व के प्रमुख औद्योगिक नगर	53-60
7.	पर्यावरणीय मुद्दे <ul style="list-style-type: none">• पारिस्थिकी तंत्र• प्रमुख पर्यावरणीय समस्याएं• मरुस्थलीकरण• वनोन्मूलन• जलवायु परिवर्तन• ग्लोबल वार्मिंग• ओजोन अवक्षय• जनसँख्या संकट• भारत में सुधार के प्रयास	60-84
8.	प्रमुख भू - राजनीतिक समस्याएं <ul style="list-style-type: none">• बदलता भू - परिदृश्य	85-90

	<u>भारत का भूगोल</u>	
1.	सामान्य परिचय <ul style="list-style-type: none"> • अर्थ • शाखाएं उपशाखाएँ • सारांश • परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न 	90-91
2.	भारत की स्थिति व विस्तार <ul style="list-style-type: none"> • सामान्य परिचय • क्षेत्रफल एवं विभिन्न रेखाएं • पड़ोसी देशों के साथ भारत की सीमा • सारांश • प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न 	92-100
3.	प्रमुख स्थलाकृतियाँ / भौतिक भू - आकृतियाँ <ul style="list-style-type: none"> • पर्वत <ul style="list-style-type: none"> ○ हिमालय, दर्रे एवं इसका वर्गीकरण • मैदान <ul style="list-style-type: none"> ○ भाबर, खादर, तराई, बांगर, रेह इत्यादि • पठार <ul style="list-style-type: none"> ○ मालवा का पठार ○ बुंदेलखंड ○ छोटानागपुर ○ बघेलखंड 	101-124

	<ul style="list-style-type: none"> ○ दंडकारण्य ○ मेघालय या शिलोंग ○ विध्यांचल पर्वत ○ सतपुड़ा पर्वत ○ पश्चिमी एवं पूर्वी घाट ● मरुस्थल ● प्रमुख द्वीप ● तटवर्ती मैदान ● सारांश ● प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न 	
4.	<p>जलवायु</p> <ul style="list-style-type: none"> ● मानसून तंत्र (भारत की जलवायु) ● वर्षा का वितरण ● मानसून की उत्पत्ति ● जलवायु की विशेषताएं ● जलवायु प्रदेश ● अल नीनो - ला नीना परिकल्पना ● कोपेन का जलवायु वर्गीकरण ● सारांश ● प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न 	125-142
5.	<p>प्रमुख नदियाँ एवं झीलें</p> <ul style="list-style-type: none"> ● उद्गम के आधार पर ● हिमालय से निकलने वाली नदियाँ ● प्रायद्वीपीय नदियाँ 	142-162

	<ul style="list-style-type: none"> • समुद्र में जल विसर्जन के आधार पर • अरब सागर में गिरने वाली नदियाँ • बंगाल की खाड़ी में गिरने वाली नदियाँ • भारत की प्रमुख झीलें • सारांश • प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न 	
6.	<p>प्राकृतिक संसाधन एवं इनका उपयोग</p> <ul style="list-style-type: none"> • मृदा संसाधन • वन संसाधन • सारांश • प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न 	162-171
7.	<p>प्रमुख फसलें (कृषि)</p> <ul style="list-style-type: none"> • गेहूँ, चावल, गन्ना, कपास, चाय, एवं कॉफी इत्यादि • सारांश • प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न 	171-182
8.	<p>प्रमुख खनिज संसाधन</p> <ul style="list-style-type: none"> • धात्विक एवं अधात्विक खनिज • सारांश • प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न 	182-189
9.	<p>ऊर्जा संसाधन</p> <ul style="list-style-type: none"> • परम्परागत स्रोत • गैर परम्परागत स्रोत 	189-198

	<ul style="list-style-type: none"> • सारांश • प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न 	
10.	<p>प्रमुख औद्योगिक प्रदेश</p> <ul style="list-style-type: none"> • विभिन्न महत्वपूर्ण उद्योग • प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न 	198-214
11.	<p>राष्ट्रीय राजमार्ग एवं प्रमुख परिवहन</p> <ul style="list-style-type: none"> • रेल परिवहन • सड़क परिवहन • वायु परिवहन • जल परिवहन • सारांश • प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न 	215-226
12.	<p>जनसंख्या - 2011</p> <ul style="list-style-type: none"> • वृद्धि • वितरण • घनत्व • लिंगानुपात • साक्षरता • नगरीय एवं ग्रामीण जनसंख्या • सारांश 	227- 233
	<u>राजस्थान का भूगोल</u>	
1.	<p>सामान्य परिचय</p> <ul style="list-style-type: none"> • राजस्थान की स्थिति • सीमायें 	233-256

	<ul style="list-style-type: none"> • रेखाएं • पड़ोसी राज्य • प्राचीन भौगोलिक क्षेत्र इत्यादि • सारांश • प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न 	
2.	<p>प्रमुख भू - आकृतिक प्रदेश</p> <ul style="list-style-type: none"> • पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश (मरुस्थल) • अरावली पर्वत माला (पर्वत) • पूर्वी मैदानी भाग (मैदान) • दक्षिणी पूर्वी पठारी प्रदेश (पठार) • भू - आकृतिक प्रदेशों की विशेषताएं • सारांश • प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न 	257-273
3.	<p>जलवायु</p> <ul style="list-style-type: none"> • जलवायु को प्रभावित करने वाले कारक • प्रमुख जलवायु प्रदेश • जलवायु की विशेषताएं • कोपेन का जलवायु का वर्गीकरण • सारांश • प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न 	273-286
4.	<p>प्रमुख नदियाँ एवं झीलें</p> <ul style="list-style-type: none"> • क्षेत्र के आधार पर वर्गीकरण • अपवाह तंत्र के आधार पर वर्गीकरण <ul style="list-style-type: none"> ○ बंगाल की खाड़ी में गिरने वाली नदियाँ ○ अरब सागर में गिरने वाली नदियाँ 	286-312

	<ul style="list-style-type: none"> • नदियाँ एवं उनके किनारे बसे प्रमुख नगर • राजस्थान में जिलेवार नदियाँ • राजस्थान की प्रमुख झीलें <ul style="list-style-type: none"> ○ खारे पानी की झीलें ○ मीठे पानी की झीलें • सारांश • प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न 	
5.	<p>प्राकृतिक वनस्पति एवं वन्यजीव</p> <ul style="list-style-type: none"> • राज्य में प्रमुख वनस्पतियों के प्रकार • वन्यजीव अभ्यारण्य • सारांश • प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न 	312-325
6.	<p>मृदा</p> <ul style="list-style-type: none"> • मृदा का वर्गीकरण • सामान्य वर्गीकरण • अमेरिकी वैज्ञानिकों के आधार पर • मृदा अपरदन • मृदा अपरदन को रोकने के उपाय • सारांश • प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न 	325-331
7.	<p>प्रमुख फसलें</p> <ul style="list-style-type: none"> • गेहूँ, मक्का, जौ, कपास, गन्ना, बाजरा इत्यादि • राजस्थान में कृषि पद्धतियाँ • फसलों का उत्पादन, वितरण इत्यादि 	332-347

	<ul style="list-style-type: none"> • कृषि जलवायु क्षेत्र • सारांश • प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न 	
8.	<p>राजस्थान में पशुपालन</p> <ul style="list-style-type: none"> • 20 वीं पशुगणना • डेयरी विकास • प्रमुख पशु मेले • सारांश • प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न 	347-356
9.	<p>प्रमुख उद्योग</p> <ul style="list-style-type: none"> • सूती वस्त्र उद्योग, चीनी उद्योग, सीमेंट उद्योग, कांच उद्योग, ऊन उद्योग, नमक उद्योग, रासायनिक उद्योग इत्यादि • प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न 	357-361
10.	<p>प्रमुख सिंचाई परियोजनाएँ एवं जल संरक्षण तकनीकें</p> <ul style="list-style-type: none"> • सारांश • प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न 	361-373
11.	<p>जनसंख्या</p> <ul style="list-style-type: none"> • महत्वपूर्ण आंकड़े <ul style="list-style-type: none"> ○ वृद्धि ○ घनत्व ○ साक्षरता ○ लिंगानुपात • प्रमुख जनजातियाँ 	373-387

	<ul style="list-style-type: none"> • सारांश • प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न 	
12.	<p>खनिज</p> <ul style="list-style-type: none"> • खनिजों के प्रकार <ul style="list-style-type: none"> ○ धात्विक खनिज ○ अधात्विक खनिज • प्रमुख खनिज भंडार • खनिजों का वितरण • खनिजों का औद्योगिक उपयोग • सारांश • प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न 	387-404
13.	<p>ऊर्जा संसाधन</p> <ul style="list-style-type: none"> • परम्परागत स्रोत • गैर परम्परागत स्रोत • राजस्थान में ऊर्जा विकास • राजस्थान में ऊर्जा की अधिष्ठापित उत्पादन क्षमता • सारांश • प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न 	405-418
14.	<p>वन्य जीव एवं जैव विविधता और इनका संरक्षण</p> <ul style="list-style-type: none"> • चुनौतियाँ एवं संरक्षण • मुख्य परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न 	419-424

15.	<p>पर्यटन स्थल एवं परिपथ</p> <ul style="list-style-type: none"> • राज्य में पर्यटन • राजस्थान में पर्यटन नीति 2020 <ul style="list-style-type: none"> ○ महत्वपूर्ण नवीनतम आंकड़ें • राजस्थान में पर्यटन विकास • परिपथ, राष्ट्रीय राजमार्ग, रेलवे, वायु सेवा • विभिन्न सड़क योजनायें • सारांश • प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न 	425-445
16.	<p>यूनेस्को की भू - पार्क एवं भू - धरोहर स्थल संकल्पना</p> <ul style="list-style-type: none"> • राजस्थान में संभावनाएं • मुख्य परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न 	446-447
17.	<p>प्रमुख पर्यावरणीय सम्बन्धी मुद्दे</p> <ul style="list-style-type: none"> • मुख्य परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न 	448-450

विश्व भूगोल

अध्याय - 1

पृथ्वी की संरचना एवं भूवैज्ञानिक समय सारिणी

भूकंपीय तरंगों के विभिन्न प्रकार की चट्टानों से संचरित होने और उनके व्यवहार में होने वाले परिवर्तन के आधार पर हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि पृथ्वी का आंतरिक भाग निम्नलिखित तीन प्रमुख संकेन्द्रीय परतों में विभक्त है:

- भूपर्पटी या क्रस्ट (Crust)
- मेंटल (Mantle)
- कोर (Core)

भूपर्पटी या क्रस्ट

यह पृथ्वी की सबसे बाह्य परत है। क्रस्ट अन्य दो परतों की तुलना में अधिक पतली, ठोस, कठोर तथा भंगुर (Brittle) प्रकृति की होती है। क्रस्ट की मोटाई सभी जगह एक समान नहीं है। महासागरीय क्रस्ट की मोटाई महाद्वीपीय क्रस्ट की तुलना में कम है। महासागरों के नीचे इसकी औसत मोटाई लगभग 5 किमी. है, जबकि महाद्वीपों के नीचे यह 30 किमी. तक विस्तृत होती है। पर्वत श्रृंखलाओं के क्षेत्र में यह मोटाई और भी अधिक है। हिमालय पर्वत श्रेणियों के नीचे क्रस्ट की मोटाई लगभग 70 किमी तक है। महाद्वीपीय क्रस्ट अधिकांशतः प्राचीन और आर्कियन है जबकि महासागरीय क्रस्ट का निर्माण जुरैसिक काल के बाद हुआ है।

क्रस्ट को दो भागों में विभाजित किया जाता है:

- **ऊपरी क्रस्ट:** क्रस्ट की ऊपरी परत ऐसी चट्टानों से मिलकर बनी है जिनका अधिकांश भाग सिलिका और एल्यूमिनियम से बना है। इसलिए इसे सियाल (SIAL = Silica + Aluminum) कहा जाता है। इस प्रकार, महाद्वीपों का अधिकांश भाग सियाल का बना हुआ है। इसका औसत घनत्व 2.7 g/cm^3 है और मोटाई लगभग 28 किमी है।
- **निचली क्रस्ट:** क्रस्ट की निचली परत अपेक्षाकृत भारी चट्टानों से निर्मित है। जिसमें मूलरूप से सिलिका (Si) और मैग्नीशियम (Mg) की प्रधानता

है। इसलिए इस भाग को सीमा (SIMA = Silica + Magnesium) कहा जाता है। महासागरीय भूपटल इसी प्रकार के चट्टानी संस्तर से बना हुआ है। इसकी औसत मोटाई 6-7 किमी और घनत्व लगभग 3.0 g/cm^3 है। सियाल और सीमा की मोटाई संयुक्त रूप से 70 किमी से अधिक नहीं है तथा यह पृथ्वी के समस्त आयतन का लगभग 1% है। पृथ्वी की त्रिव्या लगभग 6378 किमी. है इसकी तुलना में क्रस्ट की मोटाई नगण्य है।

मेंटल

- कोर से ऊपर तथा क्रस्ट के नीचे एक मोटी मध्यवर्ती परत है जिसे मेंटल कहा जाता है। इसकी मोटाई 2900 किमी है। इसका आयतन समस्त पृथ्वी के आयतन का 83% है। क्रस्ट के निचले भाग में P तरंगों की गति 6.4 km/s बढ़कर 8 km/s हो जाती है। P-तरंगों के वेग में यह परिवर्तन क्रस्ट तथा मेंटल के मध्य एक असंबद्धता को प्रदर्शित करता है। इसे मोहो असंबद्धता या मोहोरोविकिक असंबद्धता के नाम से जाना जाता है।
- मेंटल को मुख्य रूप से दो भागों में बांटा जा सकता है:- नीचे स्थित मध्यमंडल (Mesosphere) तथा इसके ऊपर स्थित दुर्बलतामंडल या एस्थेनोस्फेयर (Asthenosphere)
- 'एस्टेनो' शब्द का अर्थ दुर्बलता से है। इसका विस्तार 400 किमी तक आँका गया है। ज्वालामुखी उद्गार के दौरान जो लावा धरातल पर पहुँचता है, उसका मुख्य स्रोत दुर्बलतामंडल है। मेंटल पृथ्वी के आन्तरिक भागों में होने वाली सभी प्रक्रियाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- दुर्बलतामंडल का निचला भाग भी मध्यमंडल की तरह ठोस है, किन्तु ऊपरी भाग प्लास्टिक और आंशिक रूप से पिघली हुई अवस्था में पाया जाता है। दुर्बलतामंडल में भूकंपीय तरंगों का वेग कम हो जाता है अतः इसे निम्न वेग प्रदेश (Low Velocity Zone) भी कहते हैं।
- मेंटल उच्च घनत्व वाले पदार्थों जैसे ऑक्सीजन, लोहा और मैग्नीशियम से निर्मित है। मेंटल के पदार्थों के औसत घनत्व में 3.5 g/cm^3 से 5.5 g/cm^3 के बीच परिवर्तन होता है। इस परत का तापमान 900 0C से 2200 0C के बीच होता है। इसका कारण मैग्मा की उपस्थिति है। ऊपरी परत

का दबाव क्रस्ट के निचले हिस्से और मॅटल के ऊपरी हिस्से को लगभग एक ठोस रूप प्रदान करता है। यदि यह दबाव जारी रहता है तो पृथ्वी के अंदर से पिघला हुआ मैग्मा क्रस्ट की दरारों से ज्वालामुखी विस्फोट के माध्यम से सतह तक पहुंचने का प्रयास करता है।

- संवहन धाराओं की उत्पत्ति दुर्बलतामंडल में होती है। जो महाद्वीपीय प्रवाह, भूकंप, ज्वालामुखी आदि जैसी घटनाओं के लिए ऊर्जा की आपूर्ति करता है।

असंबद्धता का आशय ऐसे सतह से है, जहाँ पर भूकंपीय तरंगों की गति अचानक परिवर्तित हो जाती है, इस परिवर्तन का कारण पृथ्वी की भौतिक रासायनिक संरचना में आया परिवर्तन है। भूकंपीय असंबद्धता भी पृथ्वी की आंतरिक संरचना को समझने में अत्यंत सहायक सिद्ध हुई है। कुछ प्रमुख भूकंपीय असंबद्धताएं निम्नलिखित हैं:-

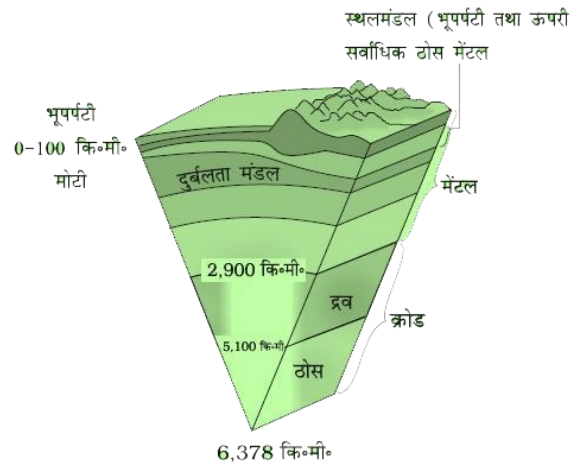
- **कोनाई असंबद्धता** - बाह्य क्रस्ट एवं आंतरिक क्रस्ट के मध्य
- **मोहो असंबद्धता** - आंतरिक क्रस्ट एवं बाह्य मॅटल के मध्य
- **रेपिटी असंबद्धता** - बाह्य मॅटल एवं आंतरिक मॅटल के मध्य
- **गुटेनबर्ग विशार्ट असंबद्धता**- आंतरिक मॅटल एवं बाह्य कोर के मध्य
- **लहमेन असंबद्धता**- बाह्य कोर एवं आंतरिक कोर के मध्य

❖ पृथ्वी की आंतरिक संरचना

कोर:- यह पृथ्वी का सबसे आंतरिक भाग है, जो मॅटल के नीचे पृथ्वी के केंद्र तक पाया जाता है। इसका विस्तार 2900 किमी की गहराई से पृथ्वी के केंद्र तक है। यह पृथ्वी की सबसे आन्तरिक परत है जिसका प्रारंभ गुटेनबर्ग असंबद्धता से होता है। अर्थात् गुटेनबर्ग असंबद्धता (2900 किमी) के द्वारा कोर तथा मॅटल को विभक्त करती है। कोर को दो उपभागों में विभक्त किया जाता है:

- (1) बाह्य कोर (2) आंतरिक कोर

- बाह्य कोर का विस्तार 2900 किमी. की गहराई से 5150 किमी. तक है जिसका औसत घनत्व 10 g/cm है। बाह्य कोर संभवतः पूरी तरह से तरल या अर्द्ध-तरल अवस्था में है। S तरंगों, गुटेनबर्ग असंबद्धता पर विलुप्त हो जाती है।
- आन्तरिक कोर ठोस अवस्था में है, जिसका विस्तार 5150 किमी की गहराई से पृथ्वी के केंद्र (6378 किमी गहराई) तक है। P-तरंगों की गति बाह्य और आंतरिक कोर की सीमा पर बढ़ जाती है। यहाँ कोर का घनत्व 12-13 g/cm³ के बीच है। कोर पृथ्वी के समस्त आयतन का 16% और द्रव्यमान का 32% है। कोर मुख्य रूप से लोहे और निकेल जैसे भारी धातुओं से बना है। इसलिए इस हिस्से को निफे (NIFE = Nickel + Ferrous) कहा जाता है। इसे बैरीस्फीयर भी कहा जाता है।



उच्च तापमान के पश्चात् भी आंतरिक कोर ठोस अवस्था में कैसे रह पाता है?

- पृथ्वी का केंद्र अत्यधिक तप्त है और इसका तापमान सूर्य की तुलना में भी अधिक है। ऐसे में सैद्धांतिक रूप से इतने उच्च तापमान पर पदार्थ गैस और तरल अवस्था में मौजूद होते हैं, लेकिन पृथ्वी का आंतरिक कोर ठोस अवस्था में है।
- वैज्ञानिकों का मानना है कि ऐसा पृथ्वी के केंद्र में लोहे के क्रिस्टलीय बॉल जैसी परमाण्विक संरचना के कारण हो सकता है, जिसके कारण उच्च तापमान और दबाव के बावजूद आंतरिक कोर ठोस बना रहता है।
- KTH रॉयल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के अनुसंधानकर्ताओं ने पृथ्वी की सतह से लगभग 6,400 किलोमीटर नीचे पृथ्वी के केंद्र में होने वाली

2. ग्रेनाईट परत
3. थैकीलाइट या डायोराइट परत
4. ड्यूनाईट, पिरीडोटाइट या इक्लोजाईट परत

भूवैज्ञानिक समय सारणी

पृथ्वी का निर्माण आज से करीब 450 करोड़ वर्ष पूर्व हुआ। तब से लेकर आज तक के इतिहास में पृथ्वी पर अनेकों क्रमिक परिवर्तन हुए, इन क्रमिक

परिवर्तनों के समय सीमा युक्त अध्ययन को भूवैज्ञानिक समय सारणी कहते हैं। अथवा पृथ्वी के इतिहास की घटनाओं का कैलेंडर भूवैज्ञानिक समय सारणी कहलाता है।

पृथ्वी के सम्पूर्ण जीवन काल को 5 महाकल्पों(era) का 4 युगों(epoch) तथा 16 कल्पों(period) में वर्गीकृत किया गया।

कल्प(Era)	युग(Epoch)	शक(Period)	कल्प के प्रारम्भ होने का समय
1. एजोइक		1. प्री केम्ब्रियन या एलोगोनिकन 2. आर्कियन	
2. पेल्योजोइक	प्रथम युग (Primary)	1. केम्ब्रियन 2. आर्डोविसियन 3. सिल्युरियन 4. डिवोनियन 5. कार्बोनिफेरस 6. पर्मियन	600 मिलियन वर्ष पूर्व
3. मेसोजोइक	द्वितीय युग (Secondary)	1. ट्रियासिक 2. जुरैसिक 3. क्रिटेसियस	225 मिलियन वर्ष पूर्व
4. सेनोजोइक	तृतीय युग (Tertiary)	1. इयोसीन 2. ओलिगोसिन 3. मायोसीन 4. प्लायोसिन	70 मिलियन वर्ष पूर्व
5. निओजोइक	चतुर्थ युग (Quaternary)	1. प्लीस्टोसीन 2. होलोसीन	1 मिलियन वर्ष पूर्व

1. प्री पेलियोजोइक महाकल्प Pre palaeozoic (Azoic)era-:

यह सबसे प्राचीनतम महाकल्प है, जिसका समय काल 4.6 अरबवर्ष पूर्व से 60 करोड़ 600 वर्ष पूर्व तक माना जाता है।

इसके अंतर्गत दो कल्प आते हैं:-

(1) प्रीकैम्ब्रियन कल्प (2) आर्कियन कल्प

(1) प्रीकैम्ब्रियन (प्रोटोजोइक) कल्प

इस कल्प में पृथ्वी तरलावस्था से ठोस अवस्था में परिवर्तित हुई जिससे भू-पटल का निर्माण हुआ।

पृथ्वी के ठण्डे होने से जलवाष्प कणों का निर्माण एवं तीव्र वर्षा हुई, जिससे महासागरों का विकास हुआ। किंतु महासागरों में गर्म जल था।

चर्नियन हलचल से अरावली, धारवाड़, छोटानागपुर, कुटप्पा, लारेशियन पर्वत का निर्माण हुआ।

(2) आर्कियन कल्प

यह सबसे प्राचीनतम कल्प है।

इस युग में ग्रेनाइट एवं नीस चट्टानों की प्रधानता थी। इस कल्प में जीवों की उत्पत्ति नहीं हुई थी अर्थात् यह जीव रहित कल्प था।

पठार निम्न प्रकार के होते हैं -

- अंतर्पर्वतीय पठार :** पर्वत मालाओं के बीच बने पठार।
- पर्वतपदीय पठार :** पर्वत तल व मैदान के बीच उठे समतल भाग।
- महाद्वीपीय पठार :** जब पृथ्वी के भीतर जमा लैंकोलिथ भू-पृष्ठ अपरदन के कारण सतह पर उभर आते हैं, तब ऐसे कठोर पठार बनते हैं; जैसे - दक्षिण का पठार।
- तटीय पठार :** समुद्र के तटीय भाग में स्थित पठार।
- गुंबदाकार पठार :** चलन क्रिया के फलस्वरूप निर्मित पठार; जैसे - रामगढ़ गुंबद (भारत)।

अपरदन चक्र के आधार पर वर्गीकरण

- तरुण पठार:-** जिस पर अपरदन की प्रक्रिया काफी सक्रिय होती है। इसके उदाहरण संयुक्त राज्य अमेरिका का कोलोरेडो पठार व इडाहो पठार हैं।
- प्राँढ़ पठार / परिपक्व पठार :-** संयुक्त राज्य अमेरिका का अप्लेशियन पठार परिपक्व पठार का श्रेष्ठ उदाहरण है।
- जीर्ण पठार :-** जहाँ अत्यधिक अपरदन के कारण पठार के उच्चावच घिसकर प्रायः समाप्त हो जाते हैं तथा पठार एक पेनीप्लेन के रूप में परिवर्तित हो जाता है। उदाहरण- मध्य राँची का पठार।

- पुनर्युवीनित पठार:-** यदि कोई पठार जीर्णविस्था की प्राप्ति के बाद पुनः उभार के कारण अधिक ऊँचाई प्राप्त कर ले तो इस प्रकार के पठार का निर्माण होता है। जैसे- सं.रा. अमेरिका का मिसौरी पठार व राँची का पाट-पठार।

जलवायु के आधार पर पठारों के प्रकार

- शुष्क पठार:-** मरुस्थलीय एवं शुष्क प्रदेशों में स्थित पठारों को शुष्क पठार कहते हैं।
उदाहरण:- पोटवार का पठार (पाकिस्तान), अरब एवं पेंटागोनिया का पठार।
- आर्द्र पठार:-** संघन वर्षा के क्षेत्रों स्थित पठारों को आर्द्र पठार कहते हैं।
उदाहरण- असम का पठार, मेघालय का पठार
- हिम पठार- ध्रुवीय क्षेत्रों में पाए जाने वाले पठारों को हिम पठार कहते हैं।**
उदाहरण- ग्रीनलैंड और अंटार्कटिका का पठार

आकृति के आधार पर पठारों के आकार

- गुंबदाकार पठार- पृथ्वी की आन्तरिक हलचलों के कारण जब किसी भाग में गुम्बद के आकार का उभार हो जाता है। इन्हे गुम्बदाकार पठार कहते हैं।**
उदाहरण- छोटानागपुर का पठार (भारत), ओजार्क का पठार (अमेरिका)
- सीढ़ीनुमा पठार- भारत का विंध्य पठार सीढ़ीनुमा पठार का भाग है।**

विश्व के प्रमुख पठार-

क्र.सं.	नाम	स्थिति	विशेषताएँ
1.	ग्रीनलैंड का पठार	ग्रीनलैंड द्वीप (अटलांटिक महासागर के उत्तर)	21,75,600 (वर्ग किमी. तक विस्तृत)
2.	अलास्का का पठार	यूकन का पठार (संयुक्त राज्य अमेरिका)	900 से 1200 मीटर तक ऊँचा
3.	कोलम्बिया का पठार	संयुक्त राज्य अमेरिका (ओरेगान, वाशिंगटन तथा इडाहो राज्य)	4,62,500 वर्ग किमी. तक विस्तृत
4.	ग्रेट बेसिन का पठार	संयुक्त राज्य अमेरिका (ओरेगान, नेवादा, ऊटा इडाहो राज्य)	5,25,000 वर्ग किमी. तक विस्तृत
5.	कोलोरेडो का पठार	संयुक्त राज्य अमेरिका (युटाह एवं एरीजोना राज्य)	1500 से 3000 मीटर ऊँचा

निकिल (Nickel)	=	इण्डोनेशिया, फिलीपींस, कनाडा
क्रोमाइट (Chromite)	=	दक्षिण अफ्रीका, कजाखस्तान, भारत
बेंटोनाइट (Bentonite)	=	संयुक्त राज्य अमेरिका, तुर्की, भारत
कोयला (Coal)	=	चीन, भारत, संयुक्त राज्य अमेरिका
फेल्सपार (Feldspar)	=	इटली, तुर्की, चीन
कैडमियम (Cadmium)	=	चीन, जापान, दक्षिण कोरिया,

अध्याय - 7

पर्यावरणीय मुद्दे

पारिस्थितिकी विज्ञान विज्ञान की वह शाखा है जिसके अन्तर्गत जीव- विज्ञान तथा भूगोल के मौलिक सिद्धांत की पारस्परिक व्याख्या की जाती है अर्थात् किसी कालखण्ड विशेष में, किसी स्थान पर जीवों का उसके पर्यावरण के साथ पारस्परिक संबंधों का अध्ययन पारिस्थितिकी कहलाता है।

Ecology लैटिन भाषा के 2 शब्दों से मिलकर बना हुआ - OIKOS और LOGOS जहाँ OIKOS से आशय है निवास स्थान जबकि LOGOS अध्ययन शब्द को प्रतिबिम्बित करता है अर्थात् किसी जीव के निवास स्थान या आवास के अध्ययन को पारिस्थितिकी कहा जाता है।

इकोलॉजी शब्द के जन्मदाता राइटर महोदय हैं जबकि इस शब्द की सैद्धांतिक व्याख्या अर्नेस्ट हैकल ने प्रस्तुत की थी इसलिए पारिस्थितिक विज्ञान या जन्मदाता हैकल को ही समझा जाता है।

Leveles of ecological study [पारिस्थितिक विज्ञान अध्ययन के विभिन्न स्तर]

1. जनसंख्या (Population)
2. समुदाय (Community)
3. पारितन्त्र (Eco-System)
4. बायोम (जीवोम)
5. जैवमंडल (Bio-sphere)

1. **जनसंख्या:-** किसी निश्चित कालखण्ड में स्थान विशेष पर समान प्रजाति में पाये जाने वाले जीवों की कुल संख्या को पारिस्थितिक जनसंख्या कहते हैं।

यहाँ प्रजाति से आशय है वह जैव-समूह जिसमें स्वरूपगत, आनुवंशिक भिन्नता हो तथा सफल लैंगिंग एवं अलैंगिक प्रजनन पाया जाता है। जनसंख्या पारिस्थितिकी के अध्ययन की सबसे छोटी इकाई है।

2. **समुदाय-** समुदाय निर्धारित स्थान - विशेष में जीवों का वैसा समूह है जो की एक-दूसरे से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अंतरसंबंधित होते हैं। अर्थात् समुदाय की आवश्यक शर्त है कि इसमें विभिन्न

प्रजातियों पारिस्थितिक ऊर्जा के लिए एक-दूसरे पर आश्रित होती हैं।

3. पारिस्थितिक तन्त्र - पारिस्थितिकी तन्त्र पारिस्थितिकी विज्ञान के अन्तर्गत सूक्ष्म से लेकर वृहद् क्रियात्मक इकाई हैं जिसमें जैविक एवं अजैविक घटकों के मध्य अन्तर्सम्बन्धों से उत्पन्न ऊर्जा प्रवाह का अध्ययन किया जाता है।

पारिस्थितिक तन्त्र शब्द के जन्मदाता आर्थर टान्सले महोदय हैं, परन्तु इसकी सैद्धांतिक व्याख्या E.P. Odum महोदय ने अपनी पुस्तक *Fundamental of Ecology* में की है इसलिए *Father of Ecosystem Odum* महोदय को कहा जाता है।

Types of EcSo-system - क्रियात्मकता के आधार पर पारितन्त्र 2 प्रकार के होते हैं-

1. प्राकृतिक पारितन्त्र 2. कृत्रिम पारितन्त्र

1. प्राकृतिक पारितन्त्र- पारितन्त्र का वह अंग है जिसमें मानवीय हस्तक्षेप नहीं होता इसके 2 महत्त्वपूर्ण अंग हैं-

(अ) स्थलीय पारितन्त्र, घासभूमि पारितन्त्र, मरुभूमि पारितन्त्र आदि।

(ब) जलीय पारितन्त्र- जलीय पारितन्त्र स्वभावतः 2 प्रकार का होता है -

(1) प्रवाही जल का पारितन्त्र

(2) स्थायी जल का पारितन्त्र

स्थायी जल का पारितन्त्र विभिन्न प्राकृतिक पारितन्त्र में सर्वाधिक स्थिर पाया जाता है। सागरीय पारितन्त्र जलीय पारितन्त्रों में सर्वाधिक स्थिर हैं।

2 कृत्रिम पारितन्त्र- पारितन्त्र का वह अंग जो कि मानव द्वारा अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप निर्मित किया जाता है उसे कृत्रिम पारितन्त्र कहते हैं जैसे - कृषि भूमि का पारितन्त्र।

पारितन्त्र के घटक- क्रियात्मक पारितन्त्र में मुख्य रूप से 2 प्रकार के घटक पाये जाते हैं जो कि एक-दूसरे से ऊर्जा प्रवाह द्वारा जुड़े होते हैं।

(1) अजैविक घटक- पारितन्त्र के अजैविक घटक तीन वर्गों में विभक्त किये जा सकते हैं-

(1) कार्बनिक घटक- कार्बनिक घटकों का निर्माण पारितन्त्र में विभिन्न जैव- रासायनिक प्रक्रियाओं द्वारा

होता है इसलिए इन्हें रासायनिक घटकों के नाम से भी जानते हैं जैसे- कार्बोहाइड्रेट्स, प्रोटीन, वसा आदि।

(2) भौतिक घटक- इन्हें जलवायविक घटकों की भी श्रेणी में रखते हैं जैसे तापमान, आद्रता, वायुमंडलीय दाब, पवन परिसंचरण आदि के साथ-साथ उँचाई।

(3) खनिज घटक- अजैविक घटकों का पारितन्त्र में खनिजों का महत्त्वपूर्ण योगदान है जो कि विभिन्न पोषण स्तरों में चक्रीय प्रवाह के रूप में प्राप्त होते हैं। जैसे- कैल्शियम, सोडियम, पोटेशियम, P, Fe, Cu, O₂ आदि।

(2) जैविक स्वपोषी- वह जैव समुदाय जो कि भौतिक तत्वों से अपने लिए स्वयं भोज्य ऊर्जा उत्पन्न करता है उन्हें स्वपोषी कहा जाता है। इनके 2 महत्त्वपूर्ण वर्ग हैं-

1. प्रकाश संश्लेषित जीव- जो कि सूर्य से प्राप्त ऊर्जा द्वारा अपना भोजन निर्मित करता है इसके अन्तर्गत मुख्य रूप से पादप समूह आते हैं।

2. रासायनिक संश्लेषित जीव- वह सूक्ष्म जीव जो कि सूर्य प्रकाश की अनुपस्थिति में जैव- रासायनिक प्रक्रिया द्वारा अपना भोजन निर्माण करते हैं।

परपोषी- वह जैव समूह जो कि अपने भोज्य ऊर्जा हेतु स्वपोषियों पर निर्भर करता है उसे परपोषी जैव समूह कहते हैं इसे 2 वर्गों में रखा जाता है -(1) Macro (2) Micro

पारिस्थितिकी तंत्र की कार्यक्षमता -

(1) पारितन्त्र में ऊर्जा का प्रवाह विभिन्न पोषण स्तरों में हमेशा एकदिशीय होता है -

(2) पारितन्त्र कर संतुलन ऊर्जा प्रवाह पर ही निर्भर करता है।

(3) एक पोषण स्तर से दूसरे पोषण स्तर में स्थानान्तरित होती हुई ऊर्जा के अधिकांश मात्रा का हास (कमी) हो जाता है परन्तु ऊर्जा विनिष्ट नहीं होती।

(4) लिण्डमैन के अनुसार प्रत्येक पोषण स्तर में ऊर्जा का स्थानान्तरण केवल 10% होता है इसे लिण्डमैन के 10% का नियम कहा जाता है।

रेंडियर आदि टुंड्रा एवं टैगा प्रदेशों में प्रवास करते रहते हैं।

- मानव पारिस्थितिक अनुकूलन जलवायु कटिबन्ध मानव समूह विशेषताएँ आर्थिक गतिविधियाँ भोजन पहनावा विषुवतीय क्षेत्र
- नीग्रो (पिग्मी, सेमांग, सकाई, बोरो)
- कढ़ छोटा, रंग काला, बाल घुंघराले
- खाद्य संग्रहक एवं आखेटक
- माँस का प्रयोग न्यूनतम वस्त्र
- मानसूनी जलवायु
- मिश्रित मानव समूह
- रंग-श्यामल कढ़-मध्यम
- बाल-काले, लहरदार
- कृषि कार्य एवं पशुपालन
- शाकाहार व माँसाहार
- हल्के वस्त्र सम्पूर्ण शरीर को ढके हुए
- उष्ण कटिबन्ध मरुभूमि
- चलवासी पशुचारक
- कढ़-लम्बा
- क्षरहरा बदन
- रंग - भूरा पशुपालन भुने हुए अनाज तथा माँस मोटे कपड़ों से ढका हुआ बदन समशीतोष्ण कटिबन्ध
- मुख्य रूप से काकेसस प्रजाति
- रंग-गोरा,
- आँखे नीली,
- बाल सुनहरे
- मुख्य रूप से कृषि कार्य एवं औद्योगिक
- माँसाहार एवं शाकाहार मोटे ऊनी कपड़े
- क्षरहरा बदन क्रिया
- टैगा व टुंड्रा कठोर जलवायु के कारण न्यूनतम जनसंख्या एस्किमो
- रंग-पीला, लम्बा, बाल सुनहरे
- आखेट एवं खाद्य संग्रहण, मत्स्यन, कृषि माँसाहार मोटे ऊनी कपड़ों से बना हुआ लबादा

पर्यावरणीय समस्याएँ एवं मुद्दे -

राजस्थान में मरुस्थलीकरण -

वनों की अंधाधुन्ध कटाई और पर्यावरण को नुकसान पहुँचाने वाली इंसानी गतिविधियों के कारण धरती लगातार सिकुड़ती जा रही है। उपजाऊ जमीन मरुस्थल में बदल रही है। आज भारत सहित पूरा विश्व मरुस्थलीकरण की समस्याओं से जूझ रहा है

| इस समस्या से निपटने के लिये पूरा विश्व 'संयुक्त राष्ट्र मरुस्थलीकरण रोकथाम अभिसमय' (UNCCD) पर सहमत हुआ। UNCCD की पार्टियों का 14 वाँ सम्मेलन (COP14) 2 सितम्बर 2019 से 13 सितम्बर 2019 तक भारत में आयोजित किया गया।

मरुस्थलीकरण में जलवायु परिवर्तन तथा मानवीय गतिविधियों समेत अन्य कई कारणों से शुष्क, अर्द्ध-शुष्क, निर्जल इलाकों की जमीन रेगिस्तान में बदल जाती है। इससे जमीन की उत्पादक क्षमता में हास (कमी) होता है। मरुस्थलीकरण से प्राकृतिक वनस्पतियों का क्षरण तो होता ही है, साथ ही कृषि उत्पादकता, पशुधन एवं जलवायवीय घटनाएँ भी प्रभावित होती हैं। विश्व के कुल क्षेत्रफल का पाँचवाँ भाग अर्थात् 20% हिस्सा मरुस्थल है।

राजस्थान में मरुस्थलीकरण का मूल कारण

राजस्थान में मरुस्थलीकरण का मूल कारण मिट्टी के आवरण में नुकसान का होना है। मुख्य रूप से वर्षा या हवा और सतह अपवाह के कारण मृदा आवरण का नुकसान मरुस्थलीकरण के सबसे बड़े कारणों में से एक है।

राजस्थान कुल भौगोलिक क्षेत्र के अनुसार, मरुस्थलीकरण के उच्चतम क्षेत्र वाला राज्य है। राज्य में 2011-13 की अवधि के दौरान मरुस्थलीकरण और भूमि क्षरण के तहत कुल भौगोलिक क्षेत्र का 62.90% है। थार मरुस्थल राजस्थान के कुल क्षेत्रफल के 58% भू-भाग पर विस्तृत है।

सन् 1952 में "Symposia on Indian Desert" का आयोजन किया जिसमें थार मरुस्थल की उत्पत्ति, पूर्व में इसका विस्तार आदि पर विस्तृत चर्चा की गई।

सन् 1977 में काजरी के तत्वाधान में एक ग्रन्थ "Arid Zone Research and Development" का संपादन हुआ। उसमें विस्तार से मरुस्थलीकरण समस्या पर विचार प्रकट किये गये।

सन् 1977 में नैरोबी में तथा सन् 1992 में रियो-डी-जेनेरियो में UNCOD सम्मेलन आयोजित किये गये जिसमें मरुस्थलीकरण समस्या को सर्वाधिक महत्व दिया गया।

मरुस्थलीकरण के कारण-

- वनोन्मूलन
- पानी में कटाव
- हवा से मिट्टी का कटाव
- औद्योगिक कचरा
- निर्वनीकरण
- अनियंत्रित पशुचारण
- संसाधनों का अतिदोहन
- भू-जल स्तर में गिरावट
- जलवायु परिवर्तन
- निरंतर वर्षा में कमी
- निरंतर सूखा पड़ना
- भू-क्षरण
- उच्च वायुदाब का होना
- भूमि का अलाभप्रदकर उपयोग
- वायु अपरदन में वृद्धि
- प्रति चक्रवात की स्थिति
- जनसंख्या वृद्धि
- जलवायु कठोरता- उच्च तापमान, कम वर्षा

मरुस्थलों की विशेषता

- निरंतर सूखा
- वर्षा का अभाव | (15-25 सेमी. वार्षिकवर्षा)
- मिट्टी में उर्वरकता व जैविक तत्वों का अभाव
- वन्य जीवों का अभाव
- बलूई रेतीली मिट्टी की अधिकता
- तापमान की विसंगति

मरुस्थलीकरण के परिणाम

- कृषि का अंत होना
- जलवायु का शुष्क होना
- जनसंख्या की कमी
- वनस्पति की कमी
- भूमि प्रदूषण
- खनिज तेल, गैस एवं कोयला के भण्डार
- नदियों व झीलों में गाढ़ का भराव
- वनों का तीव्र विनाश

मरुस्थलीकरण रोकने के उपाय

- वृक्षारोपण
- वृक्षों की कटाई पर रोक
- नहरों का विकास
- अनियंत्रित पशुचारण पर रोक
- टपकन सिंचाई, खड़ीन पद्धति
- वर्षा के पानी का उपयोग

- पशु संख्या पर नियंत्रण
- हरित पट्टी का विकास
- भूमि का संरक्षण
- ऊर्जा के अन्य साधनों का विकास

1951-52 में भारतीय विज्ञान परिषद् द्वारा मरुस्थल के संसाधनों के संरक्षण तथा विकास का प्रयास किया गया। सन् 1957 में “मरुस्थलीय वृक्षारोपण” और “मृदा संरक्षण” स्टेशन, जौधपुर की स्थापना की गई।

1959 में जौधपुर में “काजरी” की स्थापना की गई। 1966 में “मरु विकास बोर्ड” की स्थापना की गई। सन् 1974-75 में “सूखा संभाव्य क्षेत्र कार्यक्रम” (DPAP) शुरू किया गया।

मरु विकास कार्यक्रम (DDP) 1977-78 में शुरू किया। यह केंद्र द्वारा संचालित किया गया। यह कार्यक्रम राज्य के 16 मरु जिलों के 85 खण्डों में संचालित किया जा रहा है। यह कार्यक्रम राष्ट्रीय कृषि आयोग की सिफारिश पर चलाया गया।

मरुस्थलीकरण से संबंधित महत्वपूर्ण तथ्य

- पश्चिमी राजस्थान की प्रमुख पर्यावरणीय समस्या:- मरुस्थलीकरण।
- रेगिस्तान का मार्च :- रेगिस्तान (मरुस्थल) के क्षेत्रफल का विकास होना।
- राजस्थान के 12 जिलों शुष्क रेतीले मैदान में आते हैं।
- ऑपरेशन खेजड़ा :- मरुस्थल विकास के लिए सरकार द्वारा सन् 1991 में प्रारम्भ किया गया अभियान।
- राजस्थान में बंजर भूमि विकास कार्यक्रम को क्रियान्वित करने का उत्तरदायित्व :- ग्रामीण विकास एवं पंचायतीराज विकास का है।
- रेगिस्तान के प्रसार को रोकने के लिए उपयोगी वृक्ष:- खेजड़ी है।
- पन्नाधाय जीवन अमृत योजना :- 2006 (LIC द्वारा)।
- मरुकरण संघाती कार्यक्रम :- 1999-2000 (राजस्थान के 10 जिलों में संचालित)।
- मरुगोचर योजना :- 2003-04 (10 जिलों में संचालित)।
- काजरी (CAZRI) का पूरा नाम :- Central Arid Zone Research Institute.

अध्याय - 2

भारत की स्थिति व विस्तार

- आर्यों की भरत नाम की शाखा अथवा महामानव भारत के नाम पर हमारे देश का नामकरण भारत हुआ।
- प्राचीन काल में आर्यों की भूमि के कारण यह आर्यावर्त के नाम से जाना जाता था।
- ईरानियों ने सिन्धु नदी के तटीय निवासियों को हिन्दू एवं इस भू-भाग को हिन्दूस्तान का नाम दिया।
- रोम निवासियों ने सिन्धु नदी को इण्डस तथा यूनानियों ने इण्डोस व इस देश को इण्डिया कहा। यही देश विश्व में आज भारत के नाम से विख्यात है।
- भारत एशिया महाद्वीप का एक देश है, जो एशिया के दक्षिणी भाग में स्थित है तथा तीन ओर समुद्रों से घिरा हुआ है। पूरा भारत उत्तरी गोलार्द्ध में पड़ता है।
- भारत का अक्षांशीय विस्तार 8°4' उत्तरी अक्षांश से 37°6' उत्तरी अक्षांश तक है।
- भारत का देशान्तर विस्तार 68°7' पूर्वी देशान्तर से 97°25' पूर्वी देशान्तर तक है।
- भारत का क्षेत्रफल 32,87,263 वर्ग किमी. (1269219.34 वर्ग मील) है।

कर्क रेखा अर्थात् 23½ उत्तरी अक्षांश हमारे देश के लगभग मध्य से गुजरती है यह रेखा भारत को दो भागों में विभक्त करती है (1) उत्तरी भारत, जो शीतोष्ण कटिबन्ध में फैला है तथा (2) दक्षिणी भारत, जिसका विस्तार उष्ण कटिबन्ध है।

- भारत सम्पूर्ण विश्व का लगभग 1/46 वाँ भाग है।
- क्षेत्रफल के अनुसार रूस, कनाडा, चीन, संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्राज़ील व ऑस्ट्रेलिया के बाद भारत का विश्व में 7वाँ स्थान है।
- यह रूस के क्षेत्रफल का लगभग 1/5, संयुक्त राज्य अमेरिका के क्षेत्रफल का 1/3 तथा ऑस्ट्रेलिया के क्षेत्रफल का 2/5 है।

कर्क रेखा भारत के आठ राज्यों क्रमशः गुजरात, राजस्थान, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, प. बंगाल, त्रिपुरा व मिजोरम है।

NOTE- राजस्थान की राजधानी जयपुर, त्रिपुरा की राजधानी अगरतला व मिजोरम की राजधानी आइजोल कर्क रेखा के उत्तर में तथा शेष राज्यों की राजधानियाँ दक्षिण में स्थित हैं।

NOTE - मणिपुर कर्क रेखा के सर्वाधिक उत्तर में स्थित है।

प्रश्न:- निम्न में से कौन सा भारत का राज्य कर्क रेखा के उत्तर में स्थित है? (RAS PRE. 2015)

- | | |
|--------------|-------------|
| (1) त्रिपुरा | (2) मणिपुर |
| (3) मिजोरम | (4) झारखण्ड |

उत्तर :- (2)

NOTE- कर्क रेखा राजस्थान से न्यूनतम व मध्यप्रदेश से सर्वाधिक गुजरती है।

- भारत का आकार जापान से नौ गुना तथा इंग्लैण्ड से 14 गुना बड़ा है।
- जनसंख्या की दृष्टि से संसार में भारत का चीन के बाद दूसरा स्थान है।
- विश्व का 2.4% भूमि भारत के पास है जबकि विश्व की लगभग 17.5% (वर्ष 2011 के अनुसार) जनसंख्या भारत में रहती है।
- भारत के उत्तर में नेपाल, भूटान व चीन, दक्षिण में श्रीलंका एवं हिन्द महासागर, पूर्व में बांग्लादेश, म्यांमार एवं बंगाल की खाड़ी तथा पश्चिम में पाकिस्तान एवं अरब सागर है।
- भारत को श्रीलंका से अलग करने वाला समुद्री क्षेत्र मन्नार की खाड़ी (Gulf of Mannar) तथा पाक जलडमरूमध्य (Palk Strait) है।
- प्रायद्वीप भारत (मुख्य भूमि) का दक्षिणतम बिन्दु - कन्याकुमारी के पास केप कोमोरिन (तमिलनाडु) है।
- भारत का सुदूर दक्षिणतम बिन्दु - इन्दिरा प्वाइंट (चेट निकोबार में) है।
- भारत का उत्तरी अन्तिम बिन्दु- इंदिरा कॉल (लद्दाख) है।
- भारत का मानक समय (Indian Standard Time) इलाहाबाद के पास नैनी से लिया गया है। जिसका देशान्तर 82°30' पूर्वी देशान्तर है।

(वर्तमान में मिर्जापुर) यह ग्रीनविच माध्य समय (GMT) से 5 घण्टे 30 मिनट आगे है। यह मानक समय रेखा भारत के 5 राज्यों क्रमशः उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, ओडिशा व आंध्रप्रदेश है।

- कर्क रेखा व मानक रेखा छत्तीसगढ़ राज्य में एक दुसरे को काटती है।
- भारत की लम्बाई उत्तर से दक्षिण तक 3214 किमी. तथा पूर्व से पश्चिमी तक 2933 किमी. है।
- भारत की समुद्री सीमा मुख्य भूमि, लक्षद्वीप और अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह की तटरेखा की कुल लम्बाई 7,516.6 कि.मी है जबकि स्थलीय सीमा की लम्बाई 15,200 किमी. है। भारत की मुख्य भूमि की तटरेखा 6,100 किमी. है।

भारत की तटीय / समुद्री सीमा = तट रेखा की लम्बाई 7516.6 मुख्य भूमि की तटरेखा 6,100 किमी. है।

कुल राज्य = 9 [i. पश्चिमी तट के राज्य- गुजरात (राज्यों में सबसे लंबी तट रेखा), महाराष्ट्र, गोवा (राज्यों में सबसे छोटी तट रेखा), कर्नाटक व केरल ii. पूर्वी तट के राज्य प. बंगाल, ओडिशा, आंध्रप्रदेश, तमिलनाडु]

कुल केंद्र शासित प्रदेश= अंडमान निकोबार (सर्वाधिक), लक्षद्वीप, दमन व दीव तथा (न्यूनतम) पुद्दुचेरी

- भारत के 16 राज्य व 2 केंद्र शासित प्रदेश अंतर्राष्ट्रीय सीमा बनाते हैं ।

देश की चतुर्दिक सीमा बिन्दु

- दक्षिणतम बिन्दु - इन्दिरा प्वाइंट (ग्रेट निकोबार द्वीप)
- उत्तरी बिन्दु- इन्दिरा कॉल (लद्दाख)
- पश्चिमी बिन्दु- गोहर माता (गुजरात)
- पूर्वी बिन्दु- किबिथु (अरुणाचल प्रदेश)

- मुख्य भूमि की दक्षिणी सीमा- कन्याकुमारी के पास केप कोमोरिन (तमिलनाडु)

स्थलीय सीमाओं पर स्थित भारतीय राज्य

पाकिस्तान (4)	गुजरात, राजस्थान, पंजाब, जम्मू और कश्मीर, लद्दाख
अफगानिस्तान (1)	लद्दाख
चीन (5)	लद्दाख, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश
नेपाल (5)	उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, बिहार, पश्चिम बंगाल, सिक्किम
भूटान (4)	सिक्किम, पश्चिम बंगाल, असम, अरुणाचल प्रदेश
बांग्लादेश (5)	पश्चिम बंगाल, असम, मेघालय, त्रिपुरा, मिजोरम
म्यांमार (4)	अरुणाचल प्रदेश, नागालैण्ड, मणिपुर, मिजोरम

पड़ोसी देशों के मध्य सीमा विस्तार

भारत - बांग्लादेश सीमा	4096.7 किमी.
भारत-चीन	3488 किमी.
भारत-पाक सीमा	3323 किमी.
भारत - नेपाल सीमा	1751 किमी.
भारत - म्यांमार सीमा	1643 किमी.
भारत - भूटान सीमा	699 किमी.
भारत - अफगानिस्तान	106 किमी. (वर्तमान में POK में स्थित है)

भारत पाकिस्तान के बीच बना हुआ है। इस हमले के बाद जम्मू - कश्मीर के महाराजा हरि सिंह ने जम्मू - कश्मीर को भारत में विलय कराने का फैसला किया जिसके बाद भारत और पाकिस्तान के बीच आमने - सामने से युद्ध शुरू हो गया। भारत इस मुद्दे को लेकर संयुक्त राष्ट्र गया जहाँ संयुक्त राष्ट्र ने दोनों देशों के बीच मध्यस्थता करते हुए युद्ध विराम का ऐलान किया लेकिन पाकिस्तान के कब्जे वाले जम्मू कश्मीर भू-भाग पर भारत को नियंत्रण नहीं मिल सका। इस युद्ध के बाद से ही एक ओर जहाँ भारत पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर (Pak Occupied Kashmir-POK) को अपना अभिन्न अंग बताते हुए वापस लौटाने की बात कहता है तो वहीं पाकिस्तान की मंशा ये है कि वो बाकी के कश्मीर पर भी अपना कब्जा कर ले।

✓ **LoC (Line Of Control)**

संयुक्त राष्ट्र द्वारा कश्मीर युद्ध के बाद घोषित वर्ष 1948 की संघर्ष विराम रेखा ही बाद में नियंत्रण रेखा के रूप में सामने आई। दोनों देशों के बीच वर्ष 1972 के शिमला समझौते के बाद इसे LoC के रूप में नामित किया गया।

LoC का सीमांकन दुनिया के सबसे ऊँचे युद्ध क्षेत्र सियाचिन ग्लेशियर (प्वाइंट NJ9842) तक किया गया है।

✓ **सर क्रीक सीमा रेखा**

पाकिस्तान के साथ गुजरात राज्य की सीमा पर स्थित सर क्रीक सीमा रेखा को लेकर विवाद रहा है। सर क्रीक सीमा रेखा विवाद कच्छ और सिंध के बीच समुद्री सीमा रेखा की अस्पष्टता के कारण है। आज़ादी से पहले, ये क्षेत्र ब्रिटिश भारत के बॉम्बे प्रेसीडेंसी का भाग था। वर्ष 1947 में भारत की आज़ादी के बाद सिंध पाकिस्तान का हिस्सा बन गया, जबकि कच्छ भारत का ही हिस्सा रहा। ये क्षेत्र सामरिक लिहाज़ से बेहद महत्व है। ये क्षेत्र एशिया के सबसे बड़े मछली पकड़ने वाले क्षेत्रों में से भी एक है जिसके कारण ये मछुआरों के लिए भी बहुत महत्वपूर्ण है। साथ ही इस क्षेत्र के समुद्र के नीचे तेल और गैस के विशाल भंडार मौजूद होने के कारण भी इस क्षेत्र का अपना अलग महत्व है।

✓ **सियाचिन ग्लेशियर**

सियाचिन ग्लेशियर हिमालय में पूर्वी काराकोरम रेंज में स्थित है, जो प्वाइंट NJ9842 के उत्तर - पूर्व में है, यहाँ भारत और पाकिस्तान के बीच नियंत्रण रेखा समाप्त होती है। यह दुनिया के गैर - ध्रुवीय क्षेत्रों का दूसरा सबसे लंबा ग्लेशियर है। सियाचिन ग्लेशियर दुनिया का सबसे ऊँचा युद्ध क्षेत्र है। पूरा सियाचिन ग्लेशियर वर्ष 1984 (ऑपरेशन मेघदूत) में भारत के प्रशासनिक नियंत्रण में आ गया था।

✓ **सिंधु - नदी जल संधि 1960**

भारत से पाकिस्तान जाने वाले इन छः नदियाँ - झेलम, चिनाब, रावी, ब्यास और सतलज को लेकर 19 सितंबर, 1960 को विश्व बैंक की सहायता से भारत और पाकिस्तान के बीच सिंधु - नदी जल संधि समझौता हुआ। समझौते के मुताबिक 3 पूर्वी नदियों (रावी, ब्यास और सतलज) का 80% पानी भारत को तथा 20% पानी पाकिस्तान को जबकि बाकी 3 पश्चिमी नदियों (झेलम, चिनाब, सिंधु) का 80% पानी पाकिस्तान को तथा 20% पानी भारत को देना तय हुआ था।

सिंधु - नदी जल समझौता 12 जनवरी, 1961 से लागू हुआ था। इस संधि पर भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू और पाकिस्तान के तत्कालीन राष्ट्रपति अयूब खान ने रावलिपिंडी में दस्तखत किये थे।

✓ **ताशकंद समझौता 1966**

भारत और पाकिस्तान के बीच 10 जनवरी, 1966 को हुआ एक शांति समझौता था। ये समझौता 1965 के भारत पाकिस्तान युद्ध के बाद हुआ था। ताशकंद समझौते के अनुसार ये तय हुआ था कि भारत और पाकिस्तान अपनी शक्ति का प्रयोग नहीं करेंगे और अपने विवादों का शान्तिपूर्ण तरीके से निपटारा करेंगे। ये समझौता भारत के प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री और पाकिस्तान के प्रधानमंत्री अयूब खान के बीच हुआ था।

✓ **शिमला समझौता 1972**

वर्ष 1971 में हुए भारत - पाकिस्तान युद्ध के बाद शिमला समझौता हुआ था। ये समझौता 2

- क्षेत्रफल की दृष्टि से लक्षद्वीप सबसे छोटा केन्द्र-शासित प्रदेश है।
- जनसंख्या की दृष्टि से दिल्ली सबसे बड़ा केन्द्र शासित प्रदेश है।
- जनसंख्या की दृष्टि से लक्षद्वीप सबसे छोटा केन्द्र शासित प्रदेश है।
- उत्तर प्रदेश की सीमा सबसे अधिक राज्यों (8) को छूती है- उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखण्ड एवं बिहार।
- भारत में सर्वाधिक नगरों वाला राज्य उत्तर प्रदेश है जबकि मेघालय में सबसे कम नगर हैं।
- भारत में सर्वाधिक नगरीय जनसंख्या वाला राज्य महाराष्ट्र है जबकि सबसे कम नगरीय जनसंख्या सिक्किम में है।

प्रमुख चैनल / जलडमरूमध्य	
विभाजित स्थल खण्ड	चैनल / खाड़ी / स्ट्रेट
इन्दिरा प्वाइंट-इण्डोनेशिया	ग्रेट चैनल
लघु अंडमान-निकोबार	10° चैनल
मिनीकॉय-लक्षद्वीप	9° चैनल
मालदीव-मिनीकाय	8° चैनल
भारत-श्रीलंका	पाक जलडमरूमध्य

• अभ्यासार्थ प्रश्न

1. भारत का अक्षांशीय व देशांतरिय विस्तार क्रमशः है-

- (A) 8°4' उत्तरी अक्षांश से 37°6' उत्तरी अक्षांश तथा 68°7' पूर्वी देशान्तर से 97°25' पश्चिमी देशान्तर तक
- (B) 8°4' उत्तरी अक्षांश से 37°6' उत्तरी अक्षांश तथा 68°7' पूर्वी देशान्तर से 97°25' पूर्वी देशान्तर तक
- (C) 8°4' उत्तरी अक्षांश से 37°6' दक्षिणी अक्षांश तथा 68°7' पूर्वी देशान्तर से 97°25' पूर्वी देशान्तर तक
- (D) 68°7' उत्तरी अक्षांश से 97°25' उत्तरी अक्षांश तथा 8°4' पूर्वी देशान्तर से 37°6' पूर्वी देशान्तर तक

उत्तर :- (B)

2. कर्क रेखा भारत के कितने राज्यों से होकर गुजरती है?

- (A) 5 (B) 6
(C) 7 (D) 8 (D)

3. भारत के किस राज्य की सीमा नेपाल के साथ सीमा नहीं बनाती है?

- (A) पश्चिम बंगाल (B) सिक्किम
(C) बिहार (D) हिमाचल प्रदेश (D)

4. प्राचीन भारतीय भौगोलिक मान्यता के अनुसार भारतवर्ष किस द्वीप का अंग था ?

- (A) पुष्कर द्वीप (B) जम्बू द्वीप
(C) कांच द्वीप (D) कुश द्वीप (B)

5. भारतीय भूभाग का कुल क्षेत्रफल लगभग है-

- (A) 32,87,263 वर्ग किमी.
(B) 1269219.34 वर्ग मील
(C) 32,87,263 वर्ग एकड़
(D) A व B दोनों (D)

6. भारत और श्रीलंका को अलग करने वाली जलसंधि है-

- (A) कुक जलसंधि (B) मलक्का जलसंधि
(C) पाक जलसंधि (D) सुंडा जलसंधि (C)

7. किस भारतीय राज्य की सीमा सर्वाधिक राज्यों की सीमा को स्पर्श करती है?

- (A) मध्य प्रदेश (B) असम
(C) उत्तर प्रदेश (D) आन्ध्र प्रदेश (C)

8. निम्नलिखित प्रमुख भारतीय नगरों में से कौन-सा एक सबसे अधिक पूर्व की ओर अवस्थित है?

- (A) हैदराबाद (B) भोपाल

(C) लखनऊ (D) बंगलूर (C)

9. भारत के किस प्रदेश की सीमाएं तीन देशों क्रमशः नेपाल, भूटान एवं चीन से मिलती हैं?

(A) अरुणाचल प्रदेश (B) मेघालय
(C) पश्चिम बंगाल (D) सिक्किम (D)

10. भारत के कितने राज्यों से समुद्र तटरेखा संलग्न है?

(A) 7 (B) 8
(C) 9 (D) 10 (C)

11. निम्न नगरों में से कौन-सा कर्क रेखा के निकटतम है ?

(A) कोलकाता (B) दिल्ली
(C) जोधपुर (D) नागपुर (A)

12. निम्नलिखित में से किस द्वीप युग्म को 10डिग्री चैनल अलग करता है ?

(A) दक्षिणी अंडमान तथा लिटिल अंडमान
(B) लक्षद्वीप एवं मिनिकाय
(C) छोटा अंडमान तथा कार निकोबार
(D) पंबन तथा मन्नार (C)

13. भारतीय मानक समय (IST) निम्नलिखित स्थानों में से किसके समीप से लिया जाता है -

(A) लखनऊ (B) इलाहाबाद (नैनी)
(C) मेरठ (D) मुजफ्फरनगर (B)

14. यदि अरुणाचल प्रदेश में सूर्योदय 5.00 बजे प्रातः (IST) पर होता है, तो गुजरात में काण्डला में सूर्योदय किस समय (IST) पर होगा ?

(A) लगभग 6.00 प्रातः
(B) लगभग 5.30 प्रातः

(C) लगभग 7.00 प्रातः

(D) लगभग 7.30 प्रातः (C)

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न :-

1. भारत की अक्षांशीय एवं देशांतरीय विस्तार का वर्णन कीजिए ।
2. भारत की पड़ोसी देशों से लगने वाली सीमा का नाम एवं स्थिति बताइये ?
3. पड़ोसी देशों के साथ भारत का सीमा विस्तार व सीमा संबंधी विवाद समझाइये ?
4. तटवर्ती सीमा के लाभ एवं नकारात्मक प्रभावों की व्याख्या कीजिए ?

- इन श्रेणियों पर वनस्पति का अभाव पाया जाता है।

(A) काराकोरम श्रेणी -

- यह ट्रांस हिमालय की सबसे उत्तरी श्रेणी है।
- इसकी खोज वर्ष 1906 स्वेन हेडन ने की थी।
- इस श्रेणी को "एशिया की रीढ़" कहा जाता है।
- भारत की सबसे ऊँची चोटी K2 या गाडविन ऑस्टिन (8611मी.) काराकोरम श्रेणी पर ही स्थित है।
- यह विश्व की दूसरी सबसे ऊँची चोटी है।
- काराकोरम दर्रा एवं इंदिरा कॉल इसी दर्रा में स्थित है।
- काराकोरम दर्रा (विश्व का सबसे ऊँचा दर्रा) काराकोरम शृंखला पर स्थित कश्मीर को चीन से जोड़ने वाला संकीर्ण दर्रा है।
- काराकोरम शृंखला पर भारत का सबसे लम्बा ग्लेशियर सियाचिन स्थित है।
- विश्व का सबसे ऊँचा सैनिक अड्डा (सियाचिन) यहीं अवस्थित है।
- सियाचिन ग्लेशियर से नुब्रा नदी का उद्गम होता है जिसके प्रवाह क्षेत्र में घाटी का निर्माण होता है।
- काराकोरम श्रेणी पर चार प्रमुख हिमनद (ग्लेशियर) स्थित हैं।
 - सियाचिन (72 km)
 - बाल्टोरो - (58km)
 - बीयाफो - 63 km
 - हिस्पर (61 Km)

(B) लद्दाख श्रेणी -

- विश्व की सबसे तीव्र ढलान वाली चोटी राकापोशी (7788मी.) लद्दाख श्रेणी पर ही स्थित है।
- लद्दाख श्रेणी दक्षिण पूर्व की ओर कैलाश श्रेणी के रूप में स्थित है।
- यह श्रेणी सिन्धु नदी व इसकी सहायक नदी के बीच जल विभाजक का कार्य करती है।
- इस श्रेणी में भारत का सबसे ऊँचा पठार " लद्दाख का पठार" स्थित है इसी पठार पर भू तापीय ऊर्जा के लिए प्रसिद्ध पूंगा घाटी स्थित है।
- यह भारत का न्यूनतम वर्षा वाला क्षेत्र ट्रांस स्थित है।
- इसका सर्वोच्च शिखर माउंट कैलाश है।
- इस क्षेत्र में अलवणजल की झीलें जैसे- डल और वुलर तथा लवणजल झीलें जैसे- पैगोंग सो

(गलवान घाटी के नजदीक यह विश्व की सबसे ऊँची खारे पानी की झील है) और सोमुरीरी भी पाई जाती है।

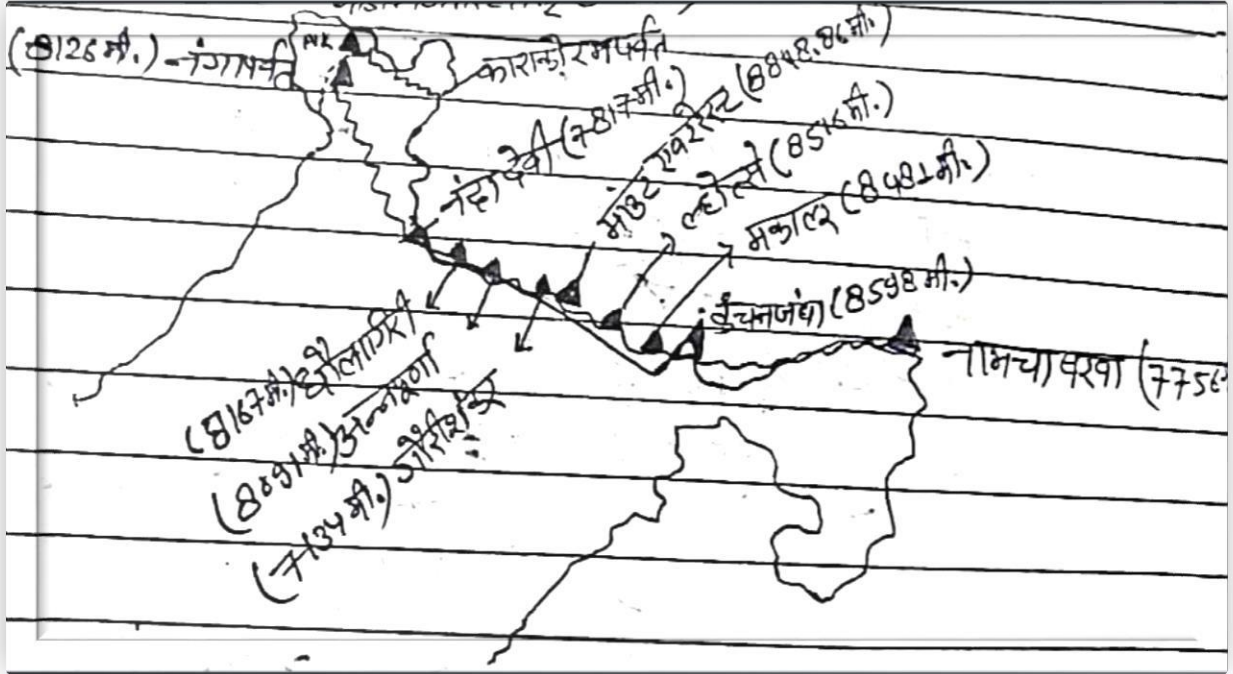
(C) जास्कर श्रेणी -

- यह लद्दाख हिमालय के समांतर दक्षिणी दिशा में स्थित है।
- नंगा पर्वत इस पर्वत श्रेणी की सबसे ऊँची चोटी है।
- लद्दाख व जास्कर श्रेणियों के बीच से ही सिन्धु नदी बहती है।
- इस श्रेणी में श्योक नदी प्रवाहित होती है।

उत्तरी हिमालय वृहत् या हिमाद्रि या महान हिमालय -

- इसका विस्तार नंगा पर्वत से नामचा बरवा पर्वत तक धनुष की आकृति में फैला हुआ है जिसकी कुल लम्बाई 2500 km तक है तथा औसत ऊँचाई 5000- 6000 मी. तक है।
- उत्तरी हिमालय को भौतिक विभाजन के दृष्टिकोण से दो भागों में बाँटा जा सकता है-
- विश्व की सर्वाधिक ऊँची चोटियाँ इसी श्रेणी पर पाई जाती हैं जिसमें प्रमुख हैं-
 - माउंट एवरेस्ट (8848 मी.) विश्व की सबसे ऊँची चोटी
 - कंचनजंगा (8598 मी.)
 - मकालू (8481 मी.)
 - धौलागिरी (8172 मी.)
 - अन्नपूर्णा (8076 मी.)
 - नंदा देवी (7817 मी.)
- एवरेस्ट को पहले तिब्बत में 'चोमोलुंगमा' के नाम से जाना जाता था जिसका अर्थ 'पर्वतो की रानी'।
- एवरेस्ट, कंचनजंगा, मकालू, धौलागिरि, नंगा पर्वत, नामचा बरवा इसके महत्वपूर्ण शिखर हैं।
- भारत में हिमालय की सर्वोच्च ऊँची चोटी कंचनजंगा यही स्थित है।
- यह विश्व की तीसरी सबसे ऊँची चोटी है।
- कश्मीर हिमालय करेवा (karewa) के लिए भी प्रसिद्ध है, जहाँ जाफरान (केसर की किस्म) की खेती की जाती है।

- वृहत हिमालय में जोजीला, पीर पंजाल, बनिहाल, जास्कर श्रेणी में फोटुला और लद्दाख श्रेणी में खारदुन्गला जैसे महत्वपूर्ण दर्रे स्थित हैं।



- सिंधु तथा इसकी सहायक नदियाँ, झेलम और चेनाब इस क्षेत्र को प्रवाहित करती हैं। यह हिमालय विलक्षण सौंदर्य और खूबसूरत दृश्य स्थलों के लिए जाना जाता है। हिमालय की यही रोमांचक दृश्यावली पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र है जिसमें प्रमुख तीर्थस्थान- जैसे वैष्णो देवी, अमरनाथ गुफा और चरार - ए - शरीफ इत्यादि हैं।

लघु या मध्य या हिमाचल हिमालय -

- महान हिमालय के दक्षिण में तथा शिवालिक के उत्तर में इसका विस्तार है। इसकी सामान्य ऊँचाई 1800-3000 मी. है।
- इसके अन्तर्गत कई श्रेणियाँ पाई जाती हैं।
 - पीर पंजाल (जम्मू कश्मीर)
 - धौलाधार (हिमाचल प्रदेश)
 - नाग टिब्बा (उत्तराखण्ड)
 - कुमायूँ (उत्तराखण्ड)
 - महाभारत (नेपाल)
- लघु हिमालय तथा महान हिमालय के बीच कई घाटियों का निर्माण हुआ है।
 - कश्मीर की घाटी (जम्मू कश्मीर)
 - कुल्लू - काँगड़ा घाटी (हिमाचल प्रदेश)
 - काठमांडू घाटी (नेपाल)

- लघु हिमालय अपने स्वास्थ्यवर्धक पर्यटन स्थलों के लिए भी प्रसिद्ध है जिसके अन्तर्गत शामिल हैं -

- कुल्लू, मनाली, डलहौजी, धर्मशाला, शिमला (हिमाचल प्रदेश)

अल्मोड़ा, मसूरी, चमोली (उत्तराखण्ड)

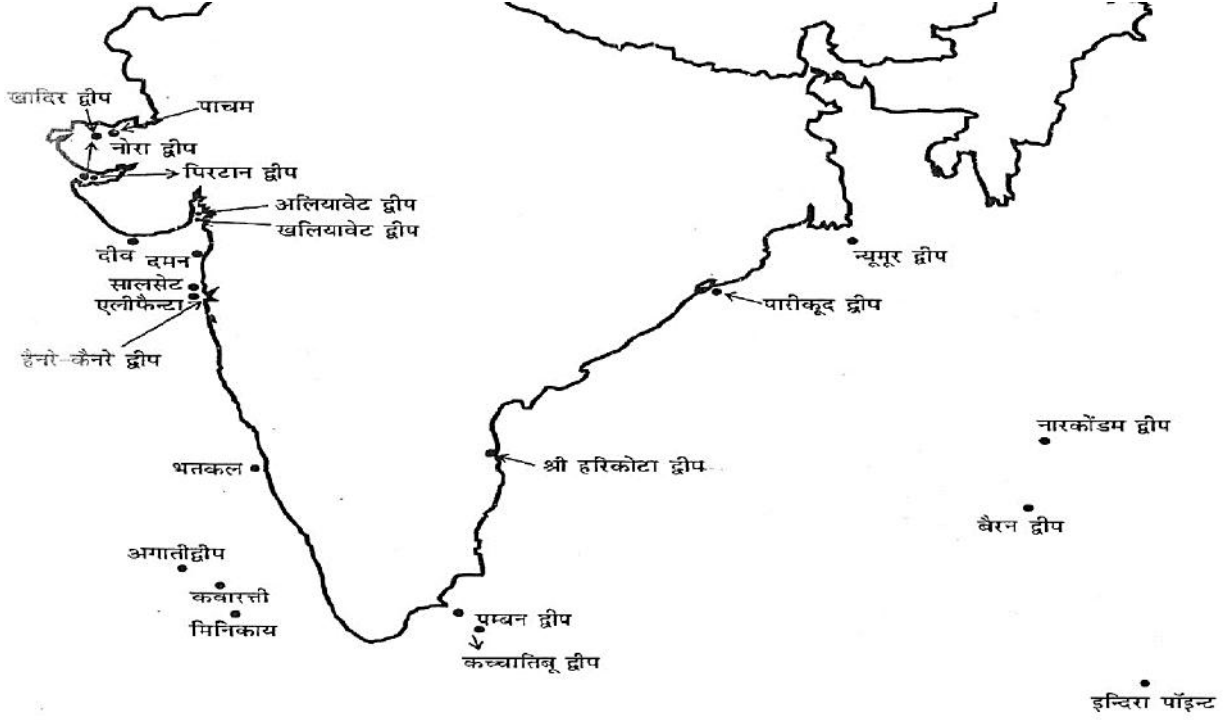
- लघु हिमालय की श्रेणियों की ढालों पर शीतोष्ण घास के मैदान पाये जाते हैं जिन्हे जम्मू-कश्मीर में 'मर्ग' (गुलमर्ग, सोनमर्ग) व उत्तराखण्ड में 'बुग्याल व पयार' कहा जाता है।

उप हिमालय शिवालिक या बाह्य हिमालय

- मध्य हिमालय के दक्षिण में शिवालिक हिमालय की अवस्थिति को बाह्य हिमालय के नाम से जानते हैं। यह लघु हिमालय के दक्षिण में स्थित है।
- शिवालिक और लघु हिमालय के बीच स्थित घाटियों को पश्चिम में दून (जैसे- देहरादून, कोटलीदून, पाटलीदून) व पूर्व में द्वार (जैसे- हरिद्वार) कहते हैं।
- शिवालिक को जम्मू कश्मीर में कश्मीर पहाड़ियाँ तथा अरुणाचल प्रदेश में डाफला, मिरी, अबोर व मिश्मी की पहाड़ियों के नाम से जाना जाता है।

चोस- (Chos)

- शिवालिक हिमालय में चलने वाली मानसूनी धाराएँ चोस कहलाती हैं।



द्वीपीय क्षेत्र

बंगाल की खाड़ी के द्वीप

1. अण्डमान और निकोबार द्वीप समूह
2. न्यू मूर द्वीप
3. सागर द्वीप
4. व्हीलर द्वीप (कलाम द्वीप)
5. श्री हरिकोटा द्वीप
6. पम्बन द्वीप
7. कच्चातिवु द्वीप

अरब सागर के द्वीप

1. पिरटान द्वीप
2. दीव
3. बसीन
4. अलियाबेट
5. खादियाबेट
6. मुंबई हाई
7. हेनरे
8. केनरे
9. बुचर
10. भटकल
11. लक्षद्वीप

श्रीहरिकोटा

- यह आंध्रप्रदेश के तट पर स्थित है।

- इसी द्वीप में भारत का एकमात्र उपग्रह प्रक्षेपण केंद्र 'सतीश धवन अंतरिक्ष' केंद्र स्थित है।

उत्तर (D)

Q.4. निम्नलिखित समूहों में कौन सा पूर्व से पश्चिम की ओर पर्वत शिखरों का सही क्रम है ?

- (A) कंचनजंगा, एवरेस्ट, अन्नपूर्णा, धौलागिरि
(B) एवरेस्ट, कंचनजंगा, अन्नपूर्णा, धौलागिरि
(C) कंचनजंगा, धौलागिरि, अन्नपूर्णा, एवरेस्ट
(D) एवरेस्ट, कंचनजंगा, धौलागिरि, अन्नपूर्णा

उत्तर :- (A)

Q.5. लघु हिमालय स्थित हैं मध्य में -

- (A) शिवालिक और महान हिमालय
(B) ट्रांस हिमालय और महान हिमालय
(C) ट्रांस हिमालय और शिवालिक
(D) शिवालिक और बाह्य हिमालय

उत्तर - (A)

Q.6. निम्नलिखित में से उत्तर से दक्षिण दिशा की ओर के सही क्रम वाली पर्वत श्रेणी कौन-सी है ?

- (A) पीरपंजाल पर्वत श्रेणी, जास्कर पर्वत श्रेणी, लद्दाख पर्वत श्रेणी, काराकोरम पर्वत श्रेणी
(B) जास्कर पर्वत श्रेणी, पीरपंजाल पर्वत श्रेणी, लद्दाख पर्वत श्रेणी, काराकोरम पर्वत श्रेणी
(C) काराकोरम पर्वत श्रेणी, लद्दाख पर्वत श्रेणी, जास्कर पर्वत श्रेणी, पीरपंजाल पर्वत श्रेणी
(D) पीरपंजाल पर्वत श्रेणी, लद्दाख पर्वत श्रेणी, जास्कर पर्वत श्रेणी, काराकोरम पर्वत श्रेणी

उत्तर (C)

Q.7. निम्नलिखित पर विचार कीजिए -

1. अरावली की पहाड़ियाँ
2. सह्याद्रि पर्वत श्रेणी
3. सतपुड़ा पर्वत श्रेणी

उपरोक्त का उत्तर से दक्षिण की ओर सही अनुक्रम कौनसा है ?

- (A) 2,1,3 (B) 1,2,3
(C) 1,3,2 (D) 2,3,1 (C)

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

1. शिवालिक हिमालय का निर्माण कैसे हुआ ? [RAS - 2021]
2. पश्चिमी घाट की पर्वत श्रेणियों / पहाड़ियों के नाम लिखिए ? [RAS - 2021]
3. छोटा नागपुर पठार का क्या महत्व है ? [RAS - 2018]
4. भारत के तटीय मैदानों को उपविभागों में विभाजित कीजिए तथा उनकी विशेषताओं का वर्णन कीजिए ? [RAS - 2016]
5. मैदानी प्रदेशों के महत्व को समझाइये ?
6. हिमालय से निकलने वाले प्रमुख दर्रे के नाम लिखिए ?

अध्याय-12

जनसंख्या - 2011

जनसंख्या:-

एक विशेष जाति या कई जातियों के सभी प्राणी, जो एक विशेष समय में एक क्षेत्र विशेष में रहते हैं, उस क्षेत्र की जनसंख्या कहलाते हैं।

भारत अपनी 121 करोड़ (2011 के अनुसार) जनसंख्या के साथ चीन के बाद विश्व में दूसरा सघनतम बसा हुआ देश है। भारत की जनसंख्या उत्तर अमेरिका, दक्षिण अमेरिका और आस्ट्रेलिया की मिलाकर कुल जनसंख्या से भी अधिक है। किसी भी देश की बड़ी जनसंख्या निश्चित तौर पर इसके सीमित संसाधनों पर दबाव डालती है और देश में अनेक सामाजिक, आर्थिक समस्याओं के लिए उत्तरदायी है।

जनसंख्या वृद्धि:-

दो समय बिंदुओं के बीच किसी क्षेत्र विशेष में रहने वाले लोगों की संख्या में परिवर्तन को जनसंख्या वृद्धि कहते हैं।

इसकी दर को प्रतिशत में अभिव्यक्त किया जाता है। जनसंख्या वृद्धि के दो घटक होते हैं-

- (1) प्राकृतिक (Natural)
- (2) अभिप्रेरित (Induced)

प्राकृतिक वृद्धि का विश्लेषण अशोधित जन्म और मृत्यु दरों से निर्धारित किया जाता है, जबकि अभिप्रेरित घटकों को किसी दिए गए क्षेत्र में लोगों के अंतर्वर्ती और बहिर्वर्ती संचलन की प्रबलता के आधार पर स्पष्ट किया जाता है।

नोट- भारत की जनसंख्या की वार्षिक वृद्धि दर 1.64 प्रतिशत है।

जनसंख्या वृद्धि के प्रमुख कारण:-

चिकित्सा सेवाओं में वृद्धि, परिवार नियोजन के प्रति विमुखता, गरीबी, कम आयु में विवाह, निम्न साक्षरता, और जनसंख्या विरोधाभास आदि ने जनसंख्या वृद्धि के प्रमुख कारण हैं।

जनसंख्या वृद्धि/परिवर्तन की प्रक्रिया-

जनसंख्या में होने वाले परिवर्तन की तीन मुख्य प्रक्रियाएँ हैं - जन्म दर, मृत्यु दर एवं प्रवास। जन्म दर एवं मृत्यु

दर के बीच का अंतर जनसंख्या की प्राकृतिक वृद्धि है।

जनसंख्या वितरण:-

भारत में जनसंख्या का असमान वितरण देखने को मिलता है।

तमिलनाडु, मध्य प्रदेश, राजस्थान, कर्नाटक और गुजरात के साथ उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, बिहार, पश्चिम बंगाल और आंध्र प्रदेश की जनसंख्या मिलकर देश की कुल जनसंख्या का 76 प्रतिशत भाग है। दूसरी ओर जम्मू और कश्मीर (1.04%), अरुणाचल प्रदेश (0.84%) और उत्तराखण्ड (0.83%) जैसे राज्यों की जनसंख्या का आकार इनके विशाल भौगोलिक क्षेत्र के बावजूद अत्यंत छोटा है।

जनसंख्या वितरण को प्रभावित करने वाले

कारक-

जनसंख्या वितरण को प्रभावित करने वाले कारक निम्नलिखित हैं-

1. भौगोलिक कारक-

1.1 भू-आकृति- भू-आकृति से तात्पर्य धरातल कि बनावट से है धरातल पर पर्वत, पठार, मैदान, नदी घाटियाँ।

जल कि उपलब्धता- जल उपलब्धता वाले क्षेत्र बसने के लिए प्राचीन काल से ही लोगो के पसंदीदा क्षेत्र रहे हैं। क्योंकि जल का उपयोग पीने, नहाने, भोजन बनाने, के साथ-साथ कृषि में, पशुओं के लिए, उद्योगों के लिए विशाल मात्रा में उपयोग किया जाता है।

जलवायु

भौतिक कारको में जलवायु भी काफी महत्वपूर्ण कारक है।

अति उष्ण एवं अति शीत जलवायु मानव के लिए अनुकूलित नहीं है। समशीतोष्ण और मानसूनी जलवायु लोगो को आकर्षित करता है। जिसके कारण लोग यहाँ अधिक संख्या में रहते हैं।

मृदाएँ

उपजाऊ मिटटी वाले क्षेत्र कृषि के लिए उपयुक्त होता है इससे अनाजों का उत्पादन प्रचुर मात्रा में होती है। लोगो का मुख्य भोजन अनाज ही होता है।

अतः लोग इन क्षेत्रों में बसने के लिए चुनते हैं। इसी कारण से उपजाऊ जलोढ़ मृदा वाले नदी घाटी क्षेत्र में अधिक लोग निवास करते हैं।

2. आर्थिक कारक-

जनसंख्या को प्रभावित करने वाले आर्थिक कारक निम्नलिखित हैं-

खनिज- खनिज संपदा से संपन्न क्षेत्र लोगो को अपनी ओर आकर्षित करता है। अतः इस प्रकार के क्षेत्र के आस पास जनसंख्या का वितरण अधिक पाया जाता है।

नगरीकरण- नगरीकरण भी जनसंख्या वितरण को प्रभावित करता है। नगरीय क्षेत्रों में ऐसी सुविधाएँ विकसित हो जाती हैं, जो लोगो को नगर की ओर आकर्षित करती हैं।

जैसे: शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, परिवहन, संचार, मनोरंजन इत्यादि। इन सुविधाओं के कारण शहरों में जनसंख्या की अधिकता देखने को मिलती है।

3. सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारक-

विश्व में अलग-अलग प्रकार के भाषा, जाति, एवं धर्म के लोग रहते हैं। उनके रीति-रिवाज अलग-अलग होते हैं वे अपने से संबंधित जाति, धर्म, भाषा के लोग उसके इर्द-गिर्द बसना चाहते हैं। एक ही प्रकार के व्यवसाय वाले लोग भी एक ही स्थान पर बसना चाहते हैं।

अलग-अलग धर्मों से संबंधित धार्मिक स्थान धीरे-धीरे नगरों में परिवर्तित होने लग जाते हैं। जैसे:- वाराणसी, अमृतसर, मक्का मदीना, येरूसलेम, वेटिकनसिटी, प्रयागराज आदि।

4. राजनैतिक कारण- किसी क्षेत्र की राजनीति भी वहाँ की जनसंख्या को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है।

अशांत एवं दंग प्रभावित क्षेत्र या युद्ध वाले स्थानों पर लोग रहना पसंद नहीं करते हैं।

जनसंख्या घनत्व-

जनसंख्या के घनत्व को प्रति इकाई क्षेत्र में व्यक्तियों की संख्या द्वारा अभिव्यक्त किया जाता है।

इससे भूमि के संदर्भ में जनसंख्या के स्थानिक वितरण को बेहतर ढंग से समझने में सहायता मिलती है। भारत का जनसंख्या घनत्व 382 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. (2011) है।

1951 ई. में जनसंख्या का घनत्व 117 व्यक्ति/वर्ग कि.मी. से बढ़कर 2011 में 382 व्यक्ति/प्रतिवर्ग कि.मी. होने से विगत 50 वर्षों में 200 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. से अधिक की उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है।

अरुणाचल प्रदेश में कम से कम 17 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. से लेकर दिल्ली के राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में 11297 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. तक है। उत्तरी भारत के राज्यों बिहार (1102), पश्चिम बंगाल (1029) तथा उत्तर प्रदेश (829) में जनसंख्या घनत्व उच्चतर है जबकि प्रायद्वीपीय भारत के राज्यों में केरल (859) और तमिलनाडु (555) में उच्चतर घनत्व पाया जाता है।

ग्रामीण एवं नगरीय जनसंख्या

जनसंख्या संघटन

जनसंख्या संघटन में आयु व लिंग का विश्लेषण, निवास का स्थान, मानवजातीय लक्षण, जनजातियाँ, भाषा, धर्म, वैवाहिक स्थिति, साक्षरता और शिक्षा, व्यावसायिक विशेषताएँ आदि का अध्ययन किया जाता है।

ग्रामीण-नगरीय संघटन

अपने अपने निवास के स्थानों के अनुसार जनसंख्या का संघटन सामाजिक और आर्थिक विशेषताओं का एक महत्वपूर्ण सूचक है।

जब देश की कुल जनसंख्या का 68.8 प्रतिशत (जनगणना 2011 के अनुसार) भाग गाँवों में रहता हो तब यह और भी सार्थक हो जाता है।

2011 की जनगणना के अनुसार भारत में 6,40,867 गाँव हैं, जिनमें से 5,97,608 (93.2 प्रतिशत) गाँव बसे हुए हैं। फिर भी पूरे देश में ग्रामीण जनसंख्या का वितरण समान नहीं है। बिहार और सिक्किम जैसे राज्यों में ग्रामीण जनसंख्या का प्रतिशत बहुत अधिक है। गोआ और महाराष्ट्र राज्यों की कुल जनसंख्या का आधे से अधिक भाग गाँवों में बसता है।

दूसरी ओर दादर और नगर हवेली (53.38 प्रतिशत) को छोड़कर केंद्र-शासित प्रदेशों का लघु अनुपात ही ग्रामीण जनसंख्या का है। गाँवों का आकार भी काफी हद तक भिन्न है। उत्तर-पूर्वी भारत के पहाड़ी राज्यों, पश्चिमी राजस्थान और कच्छ के रन में यह 200 व्यक्तियों से कम और केरल व महाराष्ट्र के कुछ भागों में यह 17,000 व्यक्ति तक पाया जाता है। भारत की ग्रामीण जनसंख्या के वितरण के प्रतिस्प का

पंजाब	846
जम्मू-कश्मीर	862

न्यूनतम लिंगानुपात (0-6)

केन्द्रशासित प्रदेश	लिंगानुपात
दिल्ली	871
चण्डीगढ़	880

साक्षरता

- भारत में कुल साक्षरता 73.0% हैं।
- भारत में पुरुष साक्षरता 80.9% हैं।
- भारत में महिला साक्षरता 64.6% हैं।
- सर्वाधिक साक्षर जिला - सरचिप (मिजोरम) 98.76% हैं।
- न्यूनतम साक्षर जिला - अलीराजपुर (म.प्र.) 37.22% हैं।
- निरक्षरों की संख्या में सर्वाधिक कमी - 1991-2001 में हुई।
- 1951 तथा 2011 में स्त्री साक्षरता क्रमशः - 8.86% एवं - 64.6% थी।
- न्यूनतम स्त्री साक्षरता - बिहार (51.5%) में थी।
- न्यूनतम पुरुष साक्षरता - बिहार (71.2%) में थी।

शीर्ष साक्षरता

राज्य	प्रतिशत
केरल	94
मिजोरम	91.3
गोवा	88.7

- सर्वाधिक स्त्री साक्षरता - केरल (92.1%) की थी।
- सर्वाधिक पुरुष साक्षरता - केरल (96.1%) की थी।
- जनगणना-2011 के दौरान साक्षरता दर में वृद्धि (8.16) हुई।
- सर्वाधिक साक्षरता दर में वृद्धि वाला दशक 1991-2001 (12.63%) था।

साक्षरता : केन्द्र शासित प्रदेश

केन्द्रशासित प्रदेश	प्रतिशत
लक्षद्वीप	91.8
दमन दीव	87.1
अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह	86.6

न्यूनतम साक्षरता

राज्य	प्रतिशत
बिहार	61.8
अरुणाचल प्रदेश	65.4
राजस्थान	66.1

शीर्ष पुरुष साक्षरता

राज्य/केन्द्रशासित प्रदेश	प्रतिशत
केरल	96.1
लक्षद्वीप	95.6
मिजोरम	93.3

न्यूनतम पुरुष साक्षरता

राज्य	प्रतिशत
बिहार	71.2
अरुणाचल प्रदेश	72.6
आंध्रप्रदेश	74.9

- वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में पुरुष और महिला साक्षरता के बीच का अंतर 16.3 प्रतिशत हैं।
- भारत में सर्वाधिक पुरुष-स्त्री साक्षरता दर में अंतर वाले दो राज्य क्रमशः राजस्थान (27.1) और झारखण्ड (21.4) हैं।
- भारत में न्यूनतम पुरुष-स्त्री साक्षरता दर में अंतर वाले दो राज्य क्रमशः मेघालय (3.1) और मिजोरम/केरल (4.0) हैं।

शीर्ष स्त्री साक्षरता

राज्य/केन्द्रशासित प्रदेश	प्रतिशत
केरल	92.1
मिजोरम	89.3
लक्षद्वीप	87.9

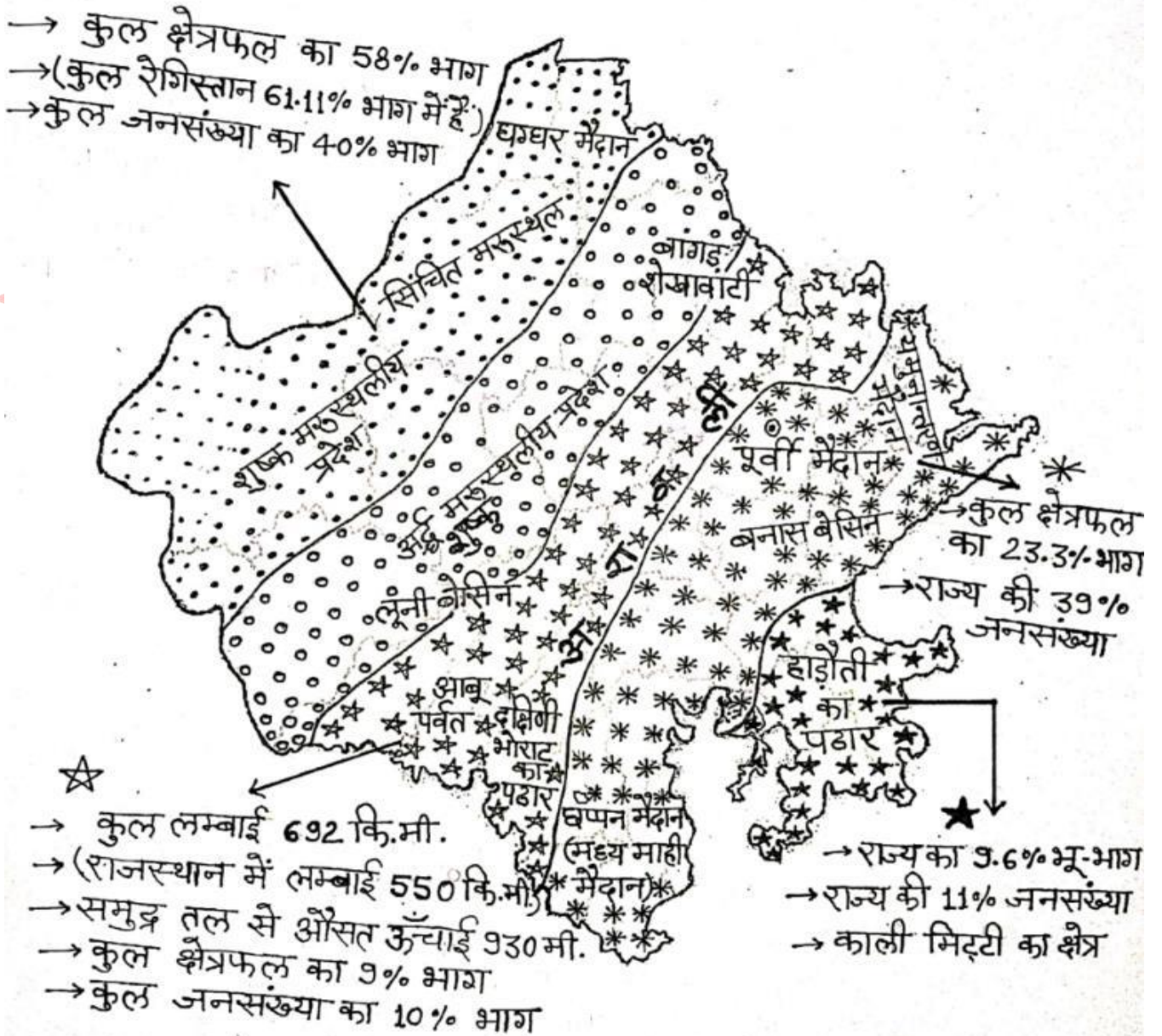
अध्याय - 2

प्रमुख भू - आकृतिक प्रदेश

नोट:- भौगोलिक रूप से राजस्थान को चार भौतिक प्रदेशों में बाँटा गया है-

1. पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश - वह क्षेत्र जहाँ पर रेगिस्तान पाया जाता है
2. अरावली पर्वतमाला - वह क्षेत्र जहाँ पर अरावली पर्वतमाला का विस्तार है।

3. पूर्वी मैदानी प्रदेश- वह क्षेत्र जहाँ पर अधिकांश दोमट व जलोढ़ मिट्टी पाई जाती है
 4. दक्षिणी - पूर्वी पठारी प्रदेश - वह क्षेत्र जहाँ पर अधिकांश मात्रा में काली मिट्टी पाई जाती है, इस क्षेत्र को हाड़ोती का पठार भी कहते हैं।
- इन चारों प्रदेशों का विस्तृत वर्णन इस प्रकार है-



• पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश:-

- जैसा कि पहले ही बताया जा चुका है कि राजस्थान का पश्चिमी मरुस्थलीय क्षेत्र टेथिस सागर का

अवशेष है, और अरावली क्षेत्र गोंडवाना लैंड का हिस्सा है।

पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश का सामान्य परिचय :-

वर्तमान में रेगिस्तान का विस्तार राज्य के कुल 61.11 प्रतिशत हिस्से पर है।

नोट:- पहले ये क्षेत्र केवल 58 प्रतिशत भाग पर ही सीमित था, लेकिन वर्तमान में अरावली पर्वतमाला के कटी - फटी होने के कारण मरुस्थल का विस्तार पश्चिम से पूर्व की ओर बढ़ रहा है।

अरावली पर्वतमाला के पश्चिम में कुल 12 जिले स्थित हैं, उनमें से 12 जिलों में रेगिस्तान का विस्तार है। यह जिले निम्न प्रकार हैं-

1. बीकानेर संभाग - बीकानेर, चुरू, हनुमानगढ़, श्रीगंगानगर
2. जोधपुर संभाग - जोधपुर, जैसलमेर, जालौर, बाड़मेर, पाली (अपवाद- सिरोही)
3. शेखावाटी क्षेत्र - सीकर, झुंझुनू
4. अजमेर संभाग - नागौर

नोट:- राज्य के सिरोही जिले में मरुस्थल का विस्तार नहीं है अर्थात् अरावली के पश्चिम में स्थित 13 जिलों में से सिरोही एक मात्र ऐसा जिला है, जो मरुस्थलीय जिलों की श्रेणी में शामिल नहीं है।

- थार का रेगिस्तान राजस्थान के उत्तर-पश्चिम भाग और पाकिस्तान में सिंध तथा पंजाब तक फैला है।
- यह उत्तर - पश्चिम में 644 किमी₀ लम्बा और 360 किमी₀ चौड़ा है।
- इस का सामान्य ढाल उत्तर - पूर्व से दक्षिण - पश्चिम की ओर है।
- मरुस्थल का ऊँचा उठा हुआ उत्तर -पूर्वी भाग 'थली' तथा दक्षिण-पश्चिम भाग नीचे का 'तली' कहलाता है।

इस मरुस्थलीय क्षेत्र में राज्य की कुल जनसंख्या का लगभग 40 प्रतिशत हिस्सा निवास करता है।

यह विश्व का सबसे अधिक जनसंख्या वाला मरुस्थल है तथा इसके अलावा यह विश्व में सर्वाधिक जैव विविधता वाला मरुस्थल भी है।

प्रश्न। भारत के थार मरुस्थल का कितना भाग राजस्थान में है? (RAS - 2016)

- | | |
|---------------|---------------|
| A. 40 प्रतिशत | B. 60 प्रतिशत |
| C. 80 प्रतिशत | D. 90 प्रतिशत |

उत्तर - B

- थार के मरुस्थल की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ हैं, कि यह विश्व का एक मात्र ऐसा मरुस्थल है, जिसके निर्माण में दक्षिण पश्चिम मानसूनी हवाओं का मुख्य योगदान है।
- थार का मरुस्थल भारतीय उपमहाद्वीप में ऋतु चक्र को भी नियंत्रित करता है।
- ग्रीष्म काल में तेज गर्मी के कारण इस प्रदेश में न्यून वायु दाब केन्द्र विकसित हो जाता है जो दक्षिण - पश्चिमी मानसूनी हवाओं को आकर्षित करता है। यह हवायें सम्पूर्ण प्रायद्वीप में वर्षा करती हैं।
- भारतीय उपमहाद्वीप में मानसून को आकर्षित करने में इस मरुस्थल की उपस्थिति अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

इस क्षेत्र में शुष्क एवं अत्यन्त विषम जलवायु पाई जाती है और तापमान गर्मियों में अत्यधिक (49° C तक) तथा सर्दियों में न्यूनतम (3° C तक) रहता है।

ऑकल जीवाश्म पार्क, जलोद्भिद तलछट व लिग्नाइट, खनिज तेल इत्यादि से इस तथ्य की पुष्टि होती है, कि थार का मरुस्थल 'पर्माकार्बोनिफेरस युग' में टेथिस सागर का हिस्सा था।

नोट:-मरुस्थलीकरण का मूल कारण :-

मरुस्थलीकरण की समस्या सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त है। विश्व की कुल जनसंख्या का छठवाँ हिस्सा मरुस्थलीकरण की समस्या से प्रभावित है।

सन् 1952 में "Symposia on Indian Desert" का आयोजन किया गया जिसमें थार के मरुस्थल की उत्पत्ति पूर्व में इसका विस्तार आदि पर विस्तृत चर्चा की गई है।

वलित पर्वत से आशय -

- "वलित पर्वत अर्थात् मोड़दार पर्वत वे पर्वत हैं जिनका निर्माण वलन नाम की भू-गर्भिक प्रक्रिया के तहत हुआ है।
- प्लेट विवर्तनिकी सिद्धांत के बाद इन के निर्माण के बारे में यह माना जाता है कि भू-सन्नतियों में जमा अवसादों की दो प्लेटों के आपस में करीब आने के कारण दबकर और सिकुड़ कर जो सिलवटें ऊपर की ओर उठती हैं उससे जो निर्माण होता है उस पर्वत को वलित पर्वत कहते हैं।
- टरसियरी युग में बने वलित पर्वत आज सबसे महत्वपूर्ण पर्वत श्रृंखला में हैं जैसे आल्प्स पर्वत, हिमालय पर्वतमाला, इत्यादि।
- विश्व के नवीनतम पर्वत हिमालय, यूराल, एंडीज इत्यादि सभी वलित पर्वत हैं।
- रूस में उपस्थित यूराल पर्वत गोलाकार दिखाई देता है और इसकी ऊँचाई काफी कम है भारत की अरावली पर्वतमाला विश्व की सबसे प्राचीन वलित पर्वत श्रृंखला है।"

अरावली पर्वतमाला को अलग - अलग स्थानों पर अलग - अलग नामों से पुकारा जाता है जैसे -

क्षेत्र	उपनाम
बूंदी में	- आडावाला पर्वत
गुजरात में	- अरावली पर्वत
सीकर में	- माल खेत की पहाड़ियाँ
जालौर तथा बालोतरा में	- मालाणी
उदयपुर जिले में	- एडाबेटा

नोट -

- अरावली पर्वतमाला की भू-गर्भिक बनावट का अध्ययन करने वाला प्रथम व्यक्ति ए. एम. हेरोन था, जिसने 1923 में अरावली पर्वतमाला का सर्वप्रथम अध्ययन किया।
- अरावली पर्वतमाला की तुलना अमेरिका के अल्पेशियन पर्वतों से की जाती है।

- अरावली पर्वतमाला को नदियों की जन्मस्थली भी कहा जाता है।

अरावली पर्वत माला का विस्तार एवं स्थिति -

1. अरावली पर्वतमाला का उद्भव सबसे दक्षिण में अरब सागर में स्थित मिनिकाँय द्वीप (लक्षद्वीप) से माना जाता है अर्थात् अरावली की जड़ें अरब सागर से प्रारंभ होती हैं इसलिए अरब सागर को अरावली की "उत्पत्ति स्थल या पिता" कहा जाता है।
2. भारत में अरावली पर्वतमाला का विस्तार दक्षिण पश्चिम में गुजरात के "पालनपुर" नामक स्थान से उत्तर - पूर्व में दिल्ली के "पालम" नामक स्थान पर समाप्त होती है यहाँ पर इन्हें "रायसीना की पहाड़ियों" के नाम से जाना जाता है इन्हीं रायसीना की पहाड़ियों पर "राष्ट्रपति भवन" बना हुआ है पालनपुर (गुजरात) से पालम (दिल्ली) तक इसकी कुल लंबाई 692 किलो मीटर है।

राष्ट्रपति भवन -

- यह भारत के राष्ट्रपति का राजकीय निवास होता है यह अद्भुत एवं विशाल भवन रायसीना की पहाड़ी जो कि अरावली पर्वत श्रेणी का भाग है पर स्थित है।
- यह दुनिया की विशालतम इमारतों में से एक है राष्ट्रपति भवन वास्तु कला का उत्कृष्ट नमूना है।
- इस भवन के निर्माण की सोच सर्वप्रथम 1911 में उस समय उत्पन्न हुई जब दिल्ली दरबार ने निर्णय किया कि भारत की राजधानी कोलकाता से दिल्ली स्थानांतरित की जाएगी।
- इसी के समय यह भी निर्णय लिया गया था कि दिल्ली में ब्रिटिश वायसराय के रहने के लिए एक आलीशान भवन का निर्माण किया जाएगा।
- यह इमारत 330 एकड़ में फैली हुई है। इस विशाल इमारत का डिजाइन सर एडविन लैंडसीर लुटियस द्वारा तैयार किया गया था।

2. राजस्थान में अरावली पर्वतमाला का विस्तार सिरोही जिले के "खेड ब्रह्मा" से झुंझुनूं जिले के "सिंधाना" (खेतड़ी) तक तथा दक्षिण की ओर

अलवर तक है। राजस्थान में अरावली की कुल लंबाई 550 किलो मीटर है। आइए समझते हैं इस अरावली पर्वतमाला को निम्न मानचित्र के द्वारा -

राजस्थान के प्रमुख पर्वत एवं पठार



4. अरावली की कुल लंबाई का 79.48% (लगभग 80%) भाग राजस्थान में स्थित है जिसका आकार एक वाद्ययंत्र "तानपुरे" के समान है। अरावली पर्वतमाला की तुलना अमेरिका में स्थित अल्पेशियन पर्वतों से की जाती है जो कि लगभग 60 से 55 करोड़ वर्ष पुराने हैं।

5. उत्पत्ति के आधार पर अरावली पर्वतमाला एक वलित पर्वत (जिसका विकास हो रहा है) तथा वर्तमान में

एक अवशिष्ट पर्वत है। इसकी औसत ऊँचाई पहले 5000 मीटर थी जो कि वर्तमान में 920 मीटर समुद्र तल से है।

6. अरावली पर्वतमाला का विस्तार राज्य के 17 जिलों में है यह राज्य के लगभग बीच में स्थित है इसलिए राज्य को दो भागों में विभाजित करती है पूर्वी भाग व दक्षिणी भाग।

7. अरावली पर्वतमाला के पश्चिम में 13 जिले आते हैं जिनमें से 12 में मरुस्थल है और एक जिला ऐसा है जो कि सिरोही है जिसमें मरुस्थल नहीं है अरावली

7. उदयपुर - राजसमंद क्षेत्र का सर्वोच्च शिखर है?

- A. जरगा B. कुम्भलगढ़
C. लीलगढ़ D. नागरानी

उत्तर - A

8. तोरावाटी की पहाड़ियाँ मुख्यतः किस क्षेत्र में विस्तृत हैं?

- A. शेखावाटी B. मध्य अरावली
C. आबू D. अजमेर

उत्तर - A

9. अरावली की निम्नलिखित पर्वत शिखरों को ऊँचाई के सही अवरोही क्रम हैं?

- A. कुम्भलगढ़ - जरगा - रघुनाथगढ़ - अचलगढ़
B. जरगा - अचलगढ़ - कुम्भलगढ़ - रघुनाथगढ़
C. अचलगढ़ - कुम्भलगढ़ - रघुनाथगढ़ - जरगा
D. रघुनाथगढ़ - कुम्भलगढ़ - अचलगढ़ - जरगा

उत्तर - A

10. शेखावाटी क्षेत्र में स्थानीय भाषा में कुँए को क्या कहते हैं?

- A. बावड़ी B. बेरा
C. जोहड़ D. खूँ

उत्तर - C

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

1. मरुस्थलीकरण क्या होता है। समझाइये ?
2. वागड क्षेत्र को समझाइये ?
3. अर्द्धशुष्क मरुस्थल पर प्रकाश डालिये ?
4. बालूका स्तूपों की व्याख्या कीजिए ?
5. अरावली पर्वत माला का स्थिति एवं विस्तार को लिखिए।
6. छप्पन बेसिन की स्थिति लिखिए ?
7. राष्ट्रीय मरु उद्यान ? [RAS - 2013]
8. राजस्थान के हाडौंती पठार की भौतिक विशेषताओं की विवेचना कीजिए ? [RAS - 2021]
9. शेखावाटी प्रदेश की भौतिक विशेषताओं का वर्णन कीजिए ? [RAS - 2018] [RAS - 2013]

अध्याय - 3

जलवायु

प्रिय पाठकों, इस अध्याय में हम राजस्थान की जलवायु के बारे में अध्ययन करेंगे।

जलवायु - किसी स्थान पर दीर्घकाल की औसत वायुमंडलीय दशाओं को (तापमान, वायुदाब, आर्द्रता, वर्षा, वायु वेग) को जलवायु कहा जाता है (समय लगभग 30 से 35 वर्ष)

उदाहरण के लिए भारत की जलवायु यूरोप की तुलना में भिन्न है, यूरोप में अक्सर बर्फबारी होती है और भयानक सर्दी पड़ती है। जबकि भारत में ऐसी बर्फबारी और सर्दी नहीं पड़ती।

मौसम - किसी स्थान पर अल्प समय की औसत वायुमंडलीय दशाओं को मौसम कहा जाता है जैसे कुछ घंटे या कुछ दिन

अतः निष्कर्ष निकालते हैं कि वर्तमान समय में जलवायु परिवर्तन के कारण स्थानीय एवं वैश्विक स्तर पर जलवायु परिवर्तन हो रहे हैं जैसे बाड़मेर में बाढ़, वर्षा की तीव्रता व आवृत्ति में परिवर्तन एवं अचानक वायु परिवर्तन हो रहे हैं अतः इन्हें रोकने के लिए क्रमबद्ध विकास पर्यावरण विकास एवं पर्यावरण प्रबंधन की आवश्यकता है।

राजस्थान की जलवायु को प्रभावित करने वाले कारक -

अब हम यह समझेंगे कि राजस्थान की जलवायु को कौन - कौन से कारक प्रभावित करते हैं अर्थात् किन कारकों के कारण राजस्थान की जलवायु में परिवर्तन आता है ?

राजस्थान भारत का सबसे बड़ा राज्य है जिसके अलग - अलग स्थानों पर अलग - अलग प्रकार की विशेषताएं पाई जाती हैं जैसे कहीं पर्वत हैं तो कहीं पर पठार, कहीं मरुस्थल, कहीं मैदानी भाग इत्यादि। यहीं सब कारक राजस्थान की जलवायु को प्रभावित करते हैं आइए जानते हैं कैसे -

1. अक्षांश एवं देशांतर स्थिति -

- राजस्थान का अक्षांशीय विस्तार 23°3' उत्तरी अक्षांश से 30°12' उत्तरी अक्षांश तक विस्तृत है

हैं और तीनों ही बाँध से जल विद्युत उत्पादन होता है।

- चंबल नदी में घड़ियाल सर्वाधिक मात्रा में पाए जाते हैं इस कारण चंबल नदी को घड़ियालों कि जन्मस्थली कहा जाता है।

चंबल की सहायक नदियाँ -

- मध्यप्रदेश में मिलने वाली नदियाँ - सीवान, रेतम, शिप्रा।
- राजस्थान में मिलने वाली नदियाँ - आलनिया, परवण, बनास, कालीसिंध, पार्वती, बामनी, कुराल, छोटी कालीसिंध आदि।

शोर्ट ट्रिक

चम्बल नदी की सहायक नदियों के नाम:-

“बना काली बाम मे कल पर्व चम्बल पर”

सूत्र	नदियाँ
बना	- बनास

काली	- कालीसिंध
बाम	- बामनी
मे	- मेज
कल	- कुराल
पर्व	- पार्वती

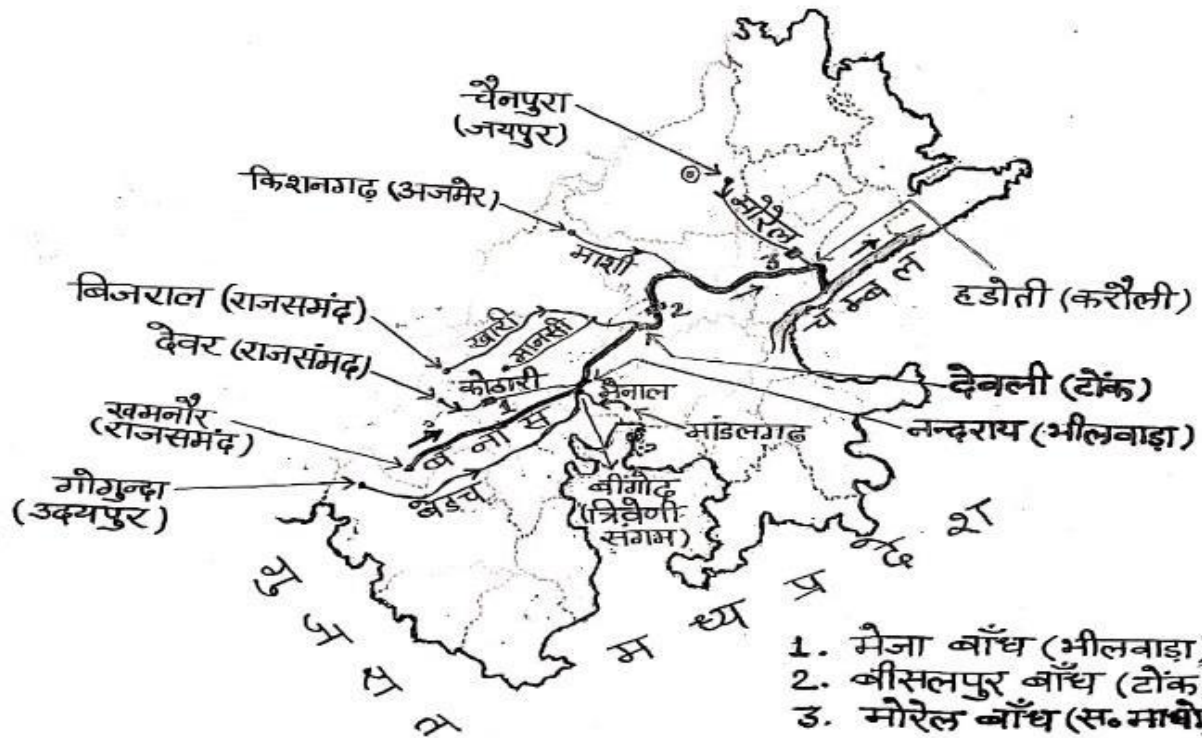
चंबल नदी पर चार बाँध बनाए गए हैं -

1. गाँधी सागर - मध्यप्रदेश की भानपुरा तहसील में
2. राणाप्रताप सागर बाँध - रावतभाटा (चित्तौड़गढ़)
3. जवाहर सागर बाँध - बोरा बास, कोटा
4. कोटा बैराज बाँध - कोटा

2. बनास नदी -

बनास नदी

- बन की आशा
- कुल लम्बाई = 480 कि.मी.



- **बनास नदी का उद्गम राजसमंद जिले में स्थित खमनौर की पहाड़ियों से होता है** पूर्णतः प्रवाह के आधार पर यह राजस्थान की सबसे लंबी नदी है इसकी कुल लंबाई लगभग 480 किलो मीटर है।
- इस नदी को वन की आशा, वर्णाशा, वनआशा, वशिष्ठ आदि नामों से जाना जाता है।
- यह नदी 6 जिलों में बहती है यह 6 जिले क्रम से हैं राजसमंद, चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा, अजमेर, टोंक, सवाई माधोपुर। इस नदी के प्रवाह क्षेत्र में भूरी मिट्टी के प्रसार पाया जाता है।
- **भीलवाड़ा जिले के बीगोढ़ नामक कस्बे के समीप बनास, बेड़च और मेनाल का त्रिवेणी संगम स्थित है।**
- टोंक जिले में देवली नामक स्थान पर बनास नदी में खारी नदी मिलती है बनास नदी टोंक जिले में सर्पाकार आकार की हो जाती है। टोंक जिले के राजमहल नामक स्थान पर बनास, डाई, खारी नदी का त्रिवेणी संगम स्थित है।
- **नोट -** राज्य की सबसे बड़ी सिंचाई परियोजना इंदिरा गांधी नहर परियोजना है, जब कि राज्य की सबसे बड़ी पेयजल परियोजना टोंक जिले में बनास नदी पर निर्मित बीसलपुर बाँध परियोजना है। इसी बीसलपुर बाँध परियोजना से जयपुर शहर को लगातार जलापूर्ति की जा रही है। बीसलपुर बाँध का निर्माण अजमेर के चौहान शासक विग्रह राज चतुर्थ (बीसलदेव) ने करवाया था।
- बनास नदी अपने प्रवाह के अंत में सवाई माधोपुर जिले के खंडार तहसील के रामेश्वर नामक स्थान पर जाकर चंबल में मिल जाती है अर्थात् बनास चंबल की सहायक नदी है जैसा कि हमने पहले ही पढ़ा था।

- बनास नदी चंबल की सबसे बड़ी सहायक नदी है इस नदी पर नाथद्वारा के पास नंदसमंद बाँध का निर्माण कराया गया है जिसको राजसमंद की लाइफ लाइन भी कहा जाता है।
- इसकी सहायक नदियाँ बेड़च, कोठारी, खारी, मानसी, मोरेल आदि हैं।

बनास नदी की मुख्य सहायक नदियों के नाम हैं।

“बेड़च खारी का मोर मांग”

सूत्र	-	नदियाँ
बेड़च	-	बेड़च
खारी	-	खारी
का	-	कोठारी
मोर	-	मोरल
मा	-	मानसी
ग	-	गम्भीरी

प्रश्न - 1. निम्न विशेषताएँ किस नदी की हैं?

(RAS - 2021)

- (i) इसका उद्गम कुंभलगढ़ किले के निकट अरावली पहाड़ियों से होता है।
- (ii) यह नदी मेवाड़ के मैदान के मध्य से गुजरती है।
- (iii) बेड़च, कोठारी व मोरेल इसकी सहायक नदियाँ हैं।

A. बनास B. लूनी C. चम्बल D. माही

उत्तर - (A)

3. बेड़च नदी -

अध्याय - 15

पर्यटन स्थल एवं परिपथ

❖ राज्य में पर्यटन

राजस्थान पर्यटन नीति 2020

- लागू 9 सितंबर 2020
- यह अंकित 5 वर्ष या नई नीति आने तक लागू रहेगी।

उद्देश्य

- राजस्थान को अग्रणी पर्यटन ब्रांड के रूप में बढ़ावा देना।
- सड़क, रेल और हवाई मार्ग के माध्यम से पर्यटन स्थलों की कनेक्टिविटी में सुधार करना।
- पर्यटकों के लिए आवासीय बुनियादी ढांचे का विस्तार करना।
- पर्यटकों (विशेषकर महिला) के लिए सुरक्षित वातावरण प्रदान करना
- ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देना तथा नये पर्यटन स्थलों उत्पादों एवं सेवाओं को बढ़ावा देना।
- स्वरोजगार पैदा करने के लिए पर्यटन विशिष्ट कौशल विकास की सुविधा प्रदान करना।
- निजी क्षेत्र के निवेश को प्रोत्साहित करना।
- पर्यटन इकाइयों की स्थापना के लिए अनुमोदन (Approval) प्रदान करने के लिए प्रशासनिक ढांचे को सशक्त बनाना।
- बेहतर नीति निर्माण और पूर्वानुमान के लिए बाजार अनुसंधान (Market research) को बढ़ावा देना।

राजस्थान पर्यटन के विभिन्न आयाम:

- राजस्थान में सबके लिए कुछ ना कुछ है। (Something for everyone)

ऐतिहासिक स्मारक:

Special heritage/craft village:

गाँव / गाँव के समूह की पहचान की जाएगी एवं उन्हें स्पेशल हेरिटेज विलेज अथवा स्पेशल क्राफ्ट विलेज का दर्जा दिया जाएगा। इसकी जिम्मेदारी जिला पर्यटन विकास समिति को दी गई है।

● मरुस्थलीय पर्यटन:

हॉर्स सफारी, कैमल सफारी, डेवर्ट कैंप, रेत के धोरों, शूटिंग के लिए आकर्षक स्थलों पर फोकस किया जा रहा है।

● एडवेंचर टूरिज्म:

राजस्थान में एडवेंचर टूरिज्म की भी पर्याप्त संभावनाएं हैं।

जैसे Aero tourism, aqua tourism, land based tourism.

- बॉर्डर टूरिज्म
- ग्रामीण पर्यटन
- एजुकेशन टूरिज्म कोटा शहर को शिक्षा नगरी के रूप में जाना जाता है। जयपुर और सीकर भी शिक्षा के बड़े हब बनकर उभरे हैं।
- वेलनेस टूरिज्म राजस्थान में अनेक औषधीय पादप पाए जाते हैं। जुलाई 2021 से राजस्थान सरकार घर-घर औषधि योजना शुरू करने जा रही है।

ट्राइबल टूरिज्म:

उदयपुर, डूंगरपुर, बाँसवाड़ा, प्रतापगढ़ को ट्राइबल सर्किट के रूप में विकसित किया गया है।

सांस्कृतिक पर्यटन

धार्मिक पर्यटन

- वेडिंग टूरिज्म (विवाह पर्यटन)
- वेडिंग टूरिज्म (विवाह पर्यटन)

क्राफ्ट टूरिज्म:

दिल्ली हाट की तर्ज पर जयपुर, जोधपुर, उदयपुर में बाजार।

MICE tourism:

(Meeting incentives conference exhibition) बड़े सेमिनार, सम्मेलनों के आयोजन को बढ़ावा देना।

Roots tourism:

प्रवासी राजस्थानियों के लिए राजस्थान कॉलिंग अभियान चलाया गया।

राजस्थान में फिल्म पर्यटन:

- फिल्म सिटी की स्थापना के लिए रिप्स के तहत एक अनुकूलित पैकेज, 2019 परियोजना प्रमोटर को पेश किया जाएगा।
- एक फिल्म पर्यटन प्रकोष्ठ (Cell) की स्थापना की जाएगी। ताकि आवेदन के 15 दिनों के भीतर सभी आवश्यक अनुमोदन उपलब्ध कराए जा सकें।
- राज्य सरकार के प्रशासनिक नियंत्रण में स्मारकों पर फिल्म शूटिंग के लिए सभी शुल्क और शुल्क से छूट दी जाएगी।
- राजस्थान में शूट की गई किसी भी फिल्म की कुल उत्पादन लागत की 15% तक अग्रिम सब्सिडी प्रदान की जाएगी।
- हेरिटेज साइट के लिए स्वच्छ स्मारक योजना शुरू की जाएगी।
- लोक निर्माण विभाग (PWD) पर्यटन स्थलों तक अंतिम छोर से कनेक्टिविटी सुनिश्चित करेगा।
- सड़कों के लिए नियोजित (Planned) बजट का 1% पर्यटन स्थलों के लिए सड़क सम्पर्क पर खर्च किया जाएगा।
- स्मार्ट सिटी परियोजनाओं के तहत नियोजित बजट खर्च का 5% पर्यटन से जुड़ी परियोजनाओं पर खर्च किया जाएगा।
- 5 से 20 कमरों की पेशकश करने वाले प्रतिष्ठानों को बढ़ावा देने के लिए एक गेस्ट हाउस योजना शुरू की जाएगी। इसे आरटीयूपी में परिभाषित किया जाएगा।
- राजस्थान पर्यटन व्यापार (सुविधा एवं विनियमन) अधिनियम 2010 में उपयुक्त संशोधन किए जाएंगे ताकि इसे और अधिक - प्रभावी बनाने के लिए पर्यटक सहायता बल को अधिक कार्यात्मक शक्तियाँ / पुलिस अधिनियम शक्तियाँ प्रदान की जा सकें।
- पर्यटन विकास के लिए नीतिगत दिशा-निर्देश प्रदान करने के लिए मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में राज्य पर्यटन सलाहकार समिति का गठन किया जाएगा।

राजस्थान में पर्यटन विकास

- राजस्थान पर्यटन विभाग का पंचवाक्य- "PADHARO MHARE DESH!"।
- राजस्थान में सर्वाधिक पर्यटक (देशी व विदेशी दोनों) - 1. पुष्कर अजमेर 2. माउण्ट आबू सिरोही।

- राजस्थान में सर्वाधिक विदेशी पर्यटक जयपुर शहर में आते हैं।
- राजस्थान में सर्वाधिक विदेशी पर्यटक 1. फ्रांस 2. ब्रिटेन से आते हैं। -
- पर्यटन की दृष्टि से राजस्थान को 9 सर्किट 1 परिपथ में बाँटा है।
- मोहम्मद यूनुस समिति की सिफारिश पर 4 मार्च 1989 को पर्यटन को उद्योग का दर्जा प्राप्त करने वाला राजस्थान भारत का प्रथम राज्य था।
- पर्यटन की दृष्टि से राजस्थान न सिर्फ भारत, अपितु विश्व के पर्यटन मानचित्र पर अपना विशिष्ट स्थान रखता है।
- यहाँ देशी-विदेशी पर्यटकों हेतु अनेक आकर्षण के केन्द्र हैं। राज्य में पर्यटन के विशेष आकर्षण के केन्द्र शाही रेलगाड़ी जैसे पैलेस ऑन व्हील्स एवं रॉयल राजस्थान ऑन व्हील्स, किले, महल एवं हवेलियाँ, मेले एवं त्यौहार, ऐतिहासिक अतीत एवं शौर्य, पराक्रम व वीरता की गाथाएँ, हस्त कलाएँ, लोक संस्कृति, हेरिटेज होटल, एडवेंचर ट्यूरिज्म, ग्रामीण एवं ईको ट्यूरिज्म, धार्मिक पर्यटन एवं मंदिरों की स्थापत्य कला, लोक संगीत एवं शास्त्रीय संगीत, नृत्य इत्यादि हैं।

पर्यटन कौन सा उद्योग है?

- पर्यटन से रोजगार एवं राजस्व में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से वृद्धि होती है। साथ ही बहुमूल्य विदेशी मुद्रा का अर्जन तथा रोजगार के अवसरों में वृद्धि होती है।
- पर्यटन उद्योग के रूप में तेजी से विकसित होने वाला क्षेत्र है, जो देश का दूसरा सबसे बड़ा विदेशी मुद्रा अर्जित करने वाला उद्योग बन चुका है।
- पर्यटन विश्व में सबसे बड़े उद्योग के रूप में उभरा है, जिसकी वृद्धि दर भी सर्वाधिक है।
- अन्य आर्थिक सेक्टरों की तुलना में पर्यटन में निवेश से सर्वाधिक प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रोजगार सृजित होता है।

राजस्थान में पर्यटन विकास

- प्रदेश के आर्थिक विकास में पर्यटन के महत्त्व को देखते हुए राज्य सरकार ने पर्यटन विकास एवं पर्यटन को विकसित करने की दिशा में अनेक कारगर कदम उठाये हैं।

4. NH-23 (6)-जयपुर, टोक, दौसा, सर्वाई माधोपुर, करौली, धौलपुर,
5. NH-754K (6)- हनुमानगढ़, गंगानगर, बीकानेर, जोधपुर, बाड़मेर, जालौर,
6. NH-62 (6) गंगानगर, बीकानेर, नागौर, जोधपुर पाली, सिरोही।

वह राष्ट्रीय राजमार्ग (NH) जो एक जिले से प्रारम्भ होकर उसी जिले में समाप्त हो जाते हैं-

1. NH-311 (झुंझुनू),
2. NH-911 A (बीकानेर),
3. NH-925 (बाड़मेर),
4. NH-148C- जयपुर,
5. NH 248-(जयपुर),
6. NH-448 (अजमेर),
7. NH-156 (चित्तौड़गढ़),
8. NH-968 (जैसलमेर) ।

- भारत का सबसे लम्बा राष्ट्रीय राजमार्ग NH-27 (411262 किमी.) है, जो पूर्वी पश्चिमी कोरिडोर के

नाम से जाना जाता है। यह पोरबंदर (गुजरात) से सिलचर (असोम) तक जाता है। दूसरा बड़ा राष्ट्रीय राजमार्ग NH-44 (3745 किमी.) पूर्व नाम NH-7 श्रीनगर - से कन्याकुमारी है, तो राजस्थान का सबसे बड़ा राष्ट्रीय राजमार्ग NH 11 (पुराना नाम - NH-15) है, जो म्याजलार (जैसलमेर) से रेवाड़ी (हरियाणा) तक जाता है, जिसकी कुल लम्बाई 847.50 किमी. है, जबकि राजस्थान में 759.7 किमी. है, तो राजस्थान का दूसरा NH-48 स्वर्णिम चतुर्भुज (GQ) (732 किमी.), तीसरा NH-52 (706.6 किमी.) तथा चौथा NH-62 (699 किमी.) है। -

- भारत का सबसे छोटा राष्ट्रीय राजमार्ग NH-327 (1.2 किमी.) पश्चिम बंगाल, दूसरा NH-766EE (4.27 किमी.) कर्नाटक, तीसरा NH-354B (4.61 किमी.) पंजाब है, तो राजस्थान का सबसे छोटा राष्ट्रीय राजमार्ग-NH-919 (5 किमी.) अलवर, दूसरा NH-156 (930 किमी.) चित्तौड़गढ़, तीसरा - NH-168A (10 किमी.) जालौर

क्र.	नई NH संख्या	पुरानी NH संख्या	कुल लम्बाई	राजस्थान में NH लम्बाई	वे राज्य जहाँ से गुजरता है	राजस्थान में गुजरने वाले स्थान
1.	709	-	248.59	60.30	हरियाणा, राजस्थान	झुंझुनू में पिलानी के पास हरियाणा सीमा से चुरू में राजगढ़ रोड़ तक
2.	11	15, 11	847.7	759.70	हरियाणा, राजस्थान	जैसलमेर में प्याजलार से बीकानेर चुरू सीकर झुंझुनू में सिंघाना के पास हरियाणा बॉर्डर तक।
3.	311	-	46	46	राजस्थान	झुंझुनू में सिंघाना के पास NH-11 से टीटनवाड़ा तक

1. जयपुर से उदयपुर एवं जोधपुर

2. जयपुर से बीकानेर एवं कोटा

3. अहमदाबाद-जोधपुर-जैसलमेर

4. उदयपुर जोधपुर-किशनगढ़

5. जयपुर से श्रीगंगानगर (10 जुलाई, 2018)

- माह अगस्त 2018 में उक्त संस्था का विमान श्रीगंगानगर में रनवे पर उतरते समय क्षतिग्रस्त हो जाने पश्चात् से यह सेवा संचालित नहीं हो रही है। 11 अप्रैल, 2018 से रणथम्भौर, कोटा व किशनगढ़ (अजमेर) को इन्द्रास्टेट हवाई सेवा योजना से जोड़ दिया गया है।
- राजस्थान के किशनगढ़ एयरपोर्ट से 1 अप्रैल, 2019 को स्पाइस जेट एयरलाइंस द्वारा किशनगढ़ - अहमदाबाद हवाई मार्ग शुरू हुआ। 2 नवम्बर, 2019 से दिल्ली-आगरा-जैसलमेर जम्मू-एयरवेज द्वारा हवाई सेवा शुरू कर दी गई है।

रीजनल कनेक्टिविटी स्कीम

- भारत सरकार द्वारा वर्ष 2016 में रीजनल कनेक्टिविटी स्कीम लागू की गयी थी। इस स्कीम का मुख्य उद्देश्य देश में उपलब्ध अनुपयोगी/अल्पउपयोगी एयरपोर्ट को हवाई सेवा से जोड़ना तथा देश के आम नागरिक को कम लागत पर उड़ान की सुविधा उपलब्ध कराया जाना है।
- राजस्थान राज्य द्वारा इस स्कीम में सहभागिता दर्शाते हुए नागरिक उड्डयन मंत्रालय, भारत सरकार के साथ दिनांक 20.03.2017 को एम.ओ.यू. संपादित किया गया था। तथा वी.जी.एफ. के रूप में अब तक राशि 82.88 लाख का भुगतान किया गया है।
- एम.ओ.यू. के अनुसार प्रथम चरण की निविदा में प्राप्त प्रस्तावों के आधार पर राज्य में इस स्कीम के अर्न्तगत वर्तमान में निम्न मार्गों पर वायु सेवा संचालित है।

1. जयपुर उदयपुर (वाया जोधपुर)- जयपुर (04.10.2016)

2. कोटा-जयपुर-कोटा (अगस्त, 2017)

3. दिल्ली-बीकानेर-दिल्ली (26.09.2017 से प्रारम्भ)

4. जयपुर-जैसलमेर-जयपुर (29.10.2017 से प्रारम्भ)

5. जयपुर-आगरा-जयपुर (08.12.2017 से प्रारम्भ)

6. किशनगढ़- हैदराबाद-किशनगढ़

7. अहमदाबाद - किशनगढ़-अहमदाबाद

“सारांश”

- राजस्थान में सर्वप्रथम 1952 में राजकीय बस सेवा टोंक से शुरू की गयी थी।
- मार्च 2020 तक राज्य में सड़कों का घनत्व 78.61 किलोमीटर प्रति 100 वर्ग किलोमीटर है।
- राजस्थान में सर्वाधिक सड़कों का घनत्व दौसा व राजसमंद जिले में है। राजस्थान में सड़कों का न्यूनतम घनत्व जैसलमेर जिले में है।
- राजस्थान में कुल 48 राष्ट्रीय राजमार्ग हैं।
- राजस्थान का सबसे बड़ा राष्ट्रीय मार्ग NH- 11 है, तथा सबसे छोटा राष्ट्रीय मार्ग NH-919 है।
- वर्ष 2019 -20 की बजट घोषणा के अनुसार आगामी 5 वर्षों में प्रत्येक ग्राम पंचायत में वॉल टू वॉल विकास पथ का निर्माण किया जाना है।
- राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम की स्थापना 1 अक्टूबर 1964 को हुई। इसका मुख्यालय जयपुर में है।
- राजस्थान का पहला 6 लेन हाईवे जयपुर किशनगढ़ है।
- राज्य में रेलमार्ग 67, 415 किलोमीटर लंबा है।
- राजस्थान में प्रथम रेल (मीटरगेज लाइन) जयपुर रियासत में आगरा फोर्ट से बांदीकुई के बीच अप्रैल 1874 में चलाई गई।
- 'धार एक्सप्रेस' मुनाबाव (बाड़मेर) से खोखरापार (पाकिस्तान) के मध्य चलती है। जोधपुर से मुनाबाव (250 किमी.) जाने वाली ट्रेन 'लिंक एक्सप्रेस' कहलाती है।
- वर्तमान में राज्य में कुल 32 हवाई पट्टियाँ हैं। अलवर की कोटकासिम तहसील में ग्रीन फील्ड एयरपोर्ट प्रस्तावित है।

महत्त्वपूर्ण प्रश्न

1. किशनगढ़ हवाई अड्डे का उदघाटन कब किया गया?

(a) अक्टूबर, 2017 (b) अक्टूबर, 2018

(c) दिसंबर, 2017 (d) दिसंबर, 2018

उत्तर (A)

2. राजस्थान में प्रथम रेलमार्ग को किस वर्ष खोला गया था।

(a) 1874 (b) 1853

(c) 1893 (d) 1899

उत्तर- (A)

3. राजस्थान में परिवहन विभाग का आदर्श वाक्य क्या है ?

(a) चरैवेति सुरक्षति (b) चरैवेति चरैवेति

(c) चलंती शीघ्रम (d) चरैवेति शीघ्रम

उत्तर- (B)

4. राजस्थान में 'ग्रामीण गौरव पथ योजना' का शुभारंभ किस वर्ष हुआ था ?

(a) 2014-15 (b) 2015-16

(c) 2018-19 (d) 2019-20

उत्तर (A)

5. राजस्थान का सबसे छोटा राष्ट्रीय राजमार्ग निम्न में से किस स्थान को नहीं जोड़ता है।

(a) रेवाड़ी (b) अलवर

(c) धारुहेड़ा (d) मानेसर

उत्तर - (d)

6. राजस्थान राज्य पथ परिवहन की स्थापना कब हुई।

(a) 1964 में (b) 1970 में

(c) 1968 में (d) 1966 में

उत्तर - (A)

7. सिरोही - उदयपुर - चित्तौड़ - कोटा - बारां राष्ट्रीय राजमार्ग का नया नंबर क्या है ?

(a) NH-21 (b) NH -27

(c) NH -62 (d) NH -76

उत्तर- (B)

8. राजस्थान में 'मुख्यमंत्री सड़क योजना' किस वर्ष में लागू की गई ?

(A) 2002 (b) 2005

(C) 2007 (d) 2010

उत्तर-(B)

9. स्वर्णिम चतुर्भुज योजना संबंधित है ?

(a) पर्यटन विभाग से

(b) खनन विभाग से

(c) राष्ट्रीय राजमार्ग विकास से

(d) ऊर्जा विकास से

उत्तर - C

10. राज्य में किस वर्ष राज्य सड़क नीति की घोषणा की गई ?

(a) 1949 (b) 1994

(c) 1998 (d) 2001

उत्तर - B

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

1. राजस्थान पर्यटन नीति 2020 को समझाइये ?
2. राजस्थान में पर्यटन विकास को समझाइये ?
3. राजस्थान में पर्यटन के क्षेत्र में प्राप्त प्रमुख पुरुस्कारों के नाम लिखिए ?
4. सिंधु दर्शन यात्रा योजना को लिखिए ?
5. हृदय योजना को लिखिए ?
6. राजस्थान में पर्यटन विभाग द्वारा किये जा रहे प्रयासों का वर्णन कीजिए ?
7. राजस्थान में सड़कों की स्थिति की विवेचना कीजिए ?
8. वित्तीय वर्ष 2020 - 21 के अंतर्गत सड़क विकास हेतु दिसम्बर 2020 तक अर्जित उपलब्धियों का वर्णन कीजिए ?
9. राजस्थान की विभिन्न सड़क परियोजनाओं के नाम लिखिए ?
10. राजस्थान में सड़क विकास में लगी प्रमुख परियोजनाओं के नाम लिखिए ?

अध्याय - 16

यूनेस्को की भू-पार्क एवं भू- धरोहर स्थल संकल्पना

- (A) यूनेस्को :-
 (B) भू- पार्क एवं भू धरोहर स्थल संकल्पना
 (C) राजस्थान में संभावनाएँ
 (D) निष्कर्ष
 (E) अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

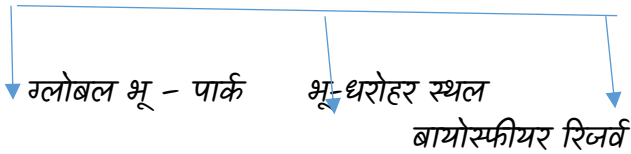
(A) यूनेस्को (UNESCO)-

- संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन जिसे यूनेस्को कहा जाता है।
- स्थापना - 16 नवम्बर 1945 (लंदन)
- मुख्यालय - पेरिस (फ्रांस)
- भारत UNESCO की सदस्यता - 1946 में

(B) भू-पार्क :-

यूनेस्को ग्लोबल जियोपार्क एकल, एकीकृत भौगोलिक क्षेत्र है जहाँ संरक्षण शिक्षा और सतत् विकास की समग्र अवधारणा के साथ अंतर्राष्ट्रीय भू- वैज्ञानिक महत्व के स्थलों और परिरक्षितों का प्रबंधन किया जाता है।

यूनेस्को



विशेषताएँ :-

- उस क्षेत्र के स्थानीय लोगों को अपने क्षेत्र पर गर्व करने का मौका मिलता है। और विश्व स्तर पर पहचान दिलाता है।
- सतत् भू-पर्यटन को बढ़ावा, जिससे स्थानीय लोगों को रोजगार मिलता है।
- सतत् विकास की प्रक्रिया में स्थानीय लोग शामिल।

Geo Diversity :- पृथ्वी की सामग्रियों एवं रूपों (खनिज, चट्टान, जीवाश्म, स्थलाकृति, अवसाद, जल, मिट्टी,) में पाई जाने वाली विविधता को भू-विविधता कहते हैं।

यह पृथ्वी की उत्पत्ति एवं निर्माण की प्रक्रिया को समझने में सहायक होती है।

भू-पर्यटन :- भूवैज्ञानिक आकर्षणों और स्थलों से जुड़ा पर्यटन भू-पर्यटन कहलाता है।

- भू-पर्यटन एक ऐसा पर्यटन है जो किसी स्थान की भौगोलिक विशेषताओं जैसे - उसका पर्यावरण, संस्कृति, सौंदर्यशास्त्र, विरासत और उसके निवासियों की भलाई आदि को बढ़ावा देने में मदद करता है।

ग्लोबल भू-पार्क :-

- यूनेस्को द्वारा भू-पार्क अवधारणा 2001 में दी गई।
- एकल एकीकृत भौगोलिक क्षेत्र है, जहाँ अंतर्राष्ट्रीय भू-वैज्ञानिक महत्व के स्थलों एवं परिरक्षितों का सुरक्षा, शिक्षा एवं सतत् विकास की समग्र अवधारणा के साथ यूनेस्को द्वारा प्रबंधन किया जाता है।
- यह Bottom-up दृष्टिकोण है, जिसमें स्थानीय समुदायों को शामिल करते हुए सतत् विकास किया जाता है।
- वर्तमान में UNESCO द्वारा 44 देशों के 169 क्षेत्रों को ग्लोबल जियो पार्क का दर्जा दिया गया है।

UNESCO जियो पार्क की मूलभूत विशेषताएँ

:-

1. **वैश्विक स्तर का भू-वैज्ञानिक विरासत स्थल :-** किसी क्षेत्र को भू-पार्क बनाने के लिए आवश्यक है कि वह स्थल अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भू-वैज्ञानिक महत्व का स्थल हो।
2. **प्रबंधन :-** जियो पार्क प्रबंधन का कार्य स्थानीय वैज्ञानिक संगठन के द्वारा किया जायेगा।
3. **दृश्यता :-** जियो पर्यटन के द्वारा सतत् पोषणीय स्थानीय आर्थिक विकास को बढ़ाना।
4. **नेटवर्क :-** प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक स्थलों की सूचनाओं का स्थानीय स्तर के साथ - साथ वैश्विक स्तर पर आदान-प्रदान करना।

जियो हेरिटेज साईट :-

- UNESCO द्वारा विश्व विरासत स्थल संकल्पना को 1972 में अपनाया गया।

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें -

RAS PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=1253s

Rajasthan CET (Graduation)-2023 - <https://youtu.be/gPqDNlc6URO>

VDO PRE. - <https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856Wl8&t=202s>

Patwari - <https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s>

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD - 2021 - <https://youtu.be/2gzzfJyt6vl>

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	30 नवम्बर	66 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2 nd शिफ्ट)	103 (150 में से)

RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2 nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1 st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2 nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2 nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1 st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21 नवम्बर 2021 (1 st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Rajasthan CET Gradu. Level	07 Janu. 2023 (1 st shift)	96 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें



Whatsapp - <https://wa.link/uwc5lp>

Online order - <https://bit.ly/3X6MGue>

Call करें 9887809083